शब्द संग्रह

प्रकाशक।

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा रेवाड़ी।

१७ वीं आवृत्ति	सं०	मूल्य
१०००	११८३	

नम्र निवेदन।

मेरे प्यारे बन्धुवर्ग! यदि आप स्वयँ सुख और शान्ति चाहते हैं और संसार को सुखमय व शान्त बनाना चाहते हैं तो उस कल्याण कारिणी भक्ति का आचरण कर संसार में भक्ति फैलाने का प्रयत्न करो। जिस भक्ति में मग्न होकर ऋषि मुनि नृत्य करते थे, जिस भक्ति के बल से भगवान् राम और कृष्ण ने संसार को स्वर्ग बना दिया था उस का रस पान करने और कराने के लिये उन ऋषि, मुनि महात्मा. ओं के बनाए गीत गाओ और उन गीतों को फैलाओ। मोक्ष में भक्तिसे बढ़ कर कोई साधन नहीं है और उपासना में गाने से बढ़ कर कोई तरीका नहीं है। देश के नर नारी और बालक यदि प्रेम में मग्न हो कर भगवान के गीत गावेंगे तो भगवान अवश्यमेव मनवांछित फल प्रदान करेंगे।

इति शुभम्।

ॐ

ओं तत्सत् परब्रह्म परमात्मने नमो नमः ।
श्री सच्चिदानन्दानन्त स्वरूपाय नमो नमः ॥

शब्द संग्रह ।

मंगलाचरण ।

दो०- नमो नमो गोविन्द गुरु विनवौं अभिजन,सोय ।
पहिले भये प्रणाम तिन, नमो जो आगे होय ॥
नमो नमो श्रीराम जू सत् चित् आनन्द रूप ।
जेही जानत जग स्वप्नवत् नाशत भ्रम तम कूप ॥

शब्द

ओं निरंजनं दुःख भंजनं ररंकार ओंकार ।
सत्य पुरुष सोंऽहं तुही अलखं सर्वा धार ॥

ओं निरंजन ररंकार प्रभु, सोऽहं सत्य ताम कर्तार ।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार, परमानन्द रूप निरधार ॥टेक॥
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार, तुमरी ज्योति का उजियार ।
मैं मैं मैं पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार ॥ ॥१

एक आत्मा अपरम्पार, शंकर ब्रह्म सर्व का सार।
ओत प्रोत सब में निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार ॥२॥
हरि नारायण अग्नि तार, देव देव मैं कर हूं पुकार।
कृष्णानन्ता चलहं गौड़ हुं, फट अल्ला सर्व पसार ॥३॥
विनवों तुम को बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार।
तद्वन गणपति नैनमंझार होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार ॥४॥

शब्द

हरि नारायण हरि नारायण, नारायण हरि ओम् २ ॥१
भव दुःख हारण सब सुख कारण पतित उधारण प्रभु ओम् २
शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूपा अगम अरूपा शिव ओम् २ ॥२
निगम निरूपा सुर नर भूपा ज्योति स्वरूपा प्रभु ओम् २॥३॥
अनन्त अपारा पार न वारा निराधारा हरि ओम् २ ॥४॥
ब्रह्म विकाश स्वयं प्रकाश जगन्निवास स्वामी ओम् २॥५
राम गोविन्द परमानन्द कृष्णमुकुन्द गुरु ओम् २ ॥ ॥

शब्द

भजो राधे कृष्णा राधेकृष्णा राधे गोविन्द ॥टेक॥
केशो जी कल्याण गिरि धरण छबीले लाल।
नन्द नदन श्री वृन्दावन चन्द ॥१॥
देवकी को छैय्या बलभद्र जी को भय्या लाल।

जाके मुख देखे ते मिटत दुःख द्वन्द ॥२॥
ब्रजपति ब्रजराय सन्तन सदा सहाय।
मुरली धरन नैना देखे ते आनन्द ॥३॥
जादों पति जादों राज सूरन के सारे काज।
याहो धुनि गावें स्वामी परमानन्द ॥४॥

शब्द

श्री मन्नारायण नारायण नारायण ॥ टेक ॥
चार वेद अरु भगवत गीता तुलसीदासजी की रामायण ॥ १ ॥
जाको नाम लेत अघ नासत काम क्रोध भये जारायण ॥ २ ॥
अजामेल गज गणका तारे, नाम लेत भये पारायण ॥ ३ ॥
क्रोट मुकट मकराकृत कुण्डल शंख चक्र गदा धारायण ॥ ४ ॥
शिवरी के फल रुचि २ पाये, भगत सुदामा तारायण ॥ ५ ॥

शब्द

हमारे प्रभु एक तुमही ओंकार
मात पिता गुरु बन्धु सहोदर धन विद्या परिवार ॥टेक॥
मन बल बुद्धि प्राण तुमही हो, नयनन में उजियार।
हरि होकर हरे रंग में दीसो, पत्र पुष्प फल डार ॥ १ ॥
धरणी अकाश शशी और तारे, बिजली में चमकार।
ऊपर नीचे परवत सागर सब तुम अपरम्पार ॥ २ ॥

तुम ही सूरज में हो गरजो, वर्षो अमृत धार।
एक धुनि हो तुम से सब की, तुमरा वार न पार ॥ ३ ॥
सुन्दर शक्ति विकाश शुद्धता, हमको दे दातार।
काम क्रोध मद लोभ निहारो, परमानन्द दो प्यार ॥ ४ ॥

शब्द

दीना नाथ दयानिधि स्वामी, कौन भांति मैं तुम्हें रिझाऊं टे०
श्री गंगा चरणों से निकसी, शूचो नीर कहां से प्रभु लाऊं।
काम धेनु कल्प वृक्ष तुम्हारे, कौन सो पदारथ भोग लगाऊं ॥
चार वेद तुम मुख से भासे, और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं।
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदंग क्या शंख बजाऊं ॥२॥
कोटि भानु थारे नख की शोभा, दीपक ले प्रभु कहा दिखाऊं।
लक्ष्मी थारी चरणन की चेरी, कौन द्रव्य प्रभु भेट चढ़ाऊं ॥३
तुम तिरलोकी के करता हरता, तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊं।
सूर श्याम प्रभु विपत बिडारन, मनवांछित फल तुम ही से पाऊं

शब्द

आप ही धारम धारी म्हारे सत्गुरु आप ही खेल खिलारी हो।टे०
तम्बू से असमान बनाये, जमी ग़लीचा डारी है।
चान्द सूरज दो मिसल बनाये, तारागण फुलवारी है ॥१॥
सुरत निरत की चौसर मांडी, तो पासा जग सारी है।

जिस की नरद जीत घर आवे, सो नर सुघड़ खिलारी है ॥२॥
सत् को चिन्ह बिहंगम चीन्हा जिसकी शून्य अटारी है।
जा पर सतगुरु राज़ी हो गये, उस का जगत् भिखारी है ॥३॥
अमर लोक को किया पयाना, ज्ञान घोड़े असवारी है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, अब के जीत हमारी है॥४॥

शब्द

मरहम हो सोई जानै भाई साधो, ऐसा देश हमारा है ॥टेक॥
बिन बादल बिजली वहां चमके, बिन सूरज उजियारा है।
बिना नयन वहां मोती पुरोवें, बिन स्वर शब्द उचारा है ॥१॥
भंवर गुफा में अनहद बाजे, मुरली बीन सितारा है।
निरमल बून्द मिली दरिया में, नहीं मीठा नहीं खारा है॥२॥
जात वर्ण वहां सूझत नाहीं, ना वहां वेद बिचारा है।
वहां जाय ब्रह्म बन बैठे, कहन सुनन से न्यारा है ॥३॥
इस पद को जो समझत बूझत, अलख लखे सोई प्यारा है।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, पहुंचेगा पहुंचन हारा है ॥४॥

शब्द

साधो हम हैं बासी वा देश के, कोरी वा देश के ॥टेक॥
सुरत निरत का जहां ताना पूरा, कपड़ा बुनता अलेख के ॥१॥
हमरे देश में कोई चान्द न सूरज, सदा रहत दिन एक से ॥१॥
हमरे देश का मरम कोई जाने, सदा रहै सुख एक से ॥३॥

कहत कबीर सुनो भाई साधो, साधु साहिब एक से ॥४॥

शब्द

मन परदेशी हो यह नहीं अपना देश ॥टेक॥
सत का कहना सत में रहना, आनन्द रूप किसी का भय ना।
जो कोई कहे सभी की सहना, येही रटन हमेश ॥१॥
सत्गुरु का बचन सत्य कर मानो, जगत जाल झूठा कर जानो।
तत्वमसी का रूप पिछानों, कट जांय करम कलेश ॥२॥
जो दीखे सो रूप हमारा, कोई नहीं है, हम से न्यारा।
मित्र और शत्रु कोई न हमारा, मिट गये राग और द्वष ॥३॥
शाह गुरु शुकदेव विराजे, चरण दास चरणों में साजे।
गुरु के बचन कभो नहीं, त्यागे यही सत्य उपदेश ॥४॥

शब्द

हंसा चाल बसो वा देश जहां का बसा फेरना भरे ॥टेक
जहां अगम निगम दोऊ धाम, वास तेरा परे से परे।
जहां वेदों की गम नांय, ज्ञान और ध्यान भी उरे ॥१॥
जहां बिन धरणी की बाट, चरणों ते बिना गमन करे।
जहां बिन श्रवण सुन ले, नयनों के बिना दरश करे ॥२॥
जहां बिन देही एक देव, प्राणों के बिना श्वास भरे।
जहां जगमग जगमग होय, उजारो दिन रात रहे ॥३॥
जहां प्रेम नगरिया के घाट, अधर दरियाय बगे।

जहां सन्त करैं असनान, दूजा तो कोई न्हाय सके ॥४॥
जाके न्हाये से सुख होय तपत तेरे तन की मिटै।
तेरे जन्म मरण मिट जांय. चौरासी का फन्द कटे ॥५॥
यों कहते नाथ गुलाब, अमरापुर थारा बास करै।
गुण गावै भानी नाथ, आनन्द में सदा लगा ही रहे ॥६॥

शब्द

मेरा मन बानियां रे अपनी बान कभी ना छोड़े ॥टेक॥
हेर फेर के दोनों पलड़े, अन्दर काणी डांडी।
मन में झूठ कपट हिरदे में, हाट चौंसले मांढी ॥१॥
पूरे बाट परे सरकावै कमती बाट टटोले।
पासंग मांहीं डांडी मारे, बेगा बेगा बोले ॥२॥
घर तेरे में कुबुध किराड़ी, छिन,छिन में चित चोरे।
कुनबा तेरा बड़ा हरामी, अमृत में विष घोले ॥३२
जल में तूही थल में तूही, घट घट में हरि बोले।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, भरम बन्धा जग डोलै ॥४

शब्द

मेरे सारे दुःख बिसर गये सतगुरु की मैंने शरण लई ॥टे०
और सखी सब दुबली, तू विरहन क्यों लाल।
अविनाशी की सेज पर, मौजां हुई निहाल ॥१॥
अविनाशी की सेज का, वह कितना विस्तार।

कहन सुनन की गम नहीं, पौढत बे परवाह ॥२॥
सतवन्ती पीहर बसे, अन्तर पिय का ध्यान।
कहती तो लाजां रहे, ऐसा है आतम ज्ञान ॥३॥
हंसी नहीं मुसका गई, रहे टक टके नैन।
कहैं कबीरा लख गये, सखी सखी के सैन ॥४॥

शब्द

बीरा मन समझियो रे लोभी, ये तिरने का घाट ॥टेक॥
कथनी के शूरा घने, सब बांधे हथियार।
उत कोई बिरला डटै जित बाजे तबलार ॥१॥
शूरा रण में जाय के, किस की देखे बाट।
ज्यों ज्यों पग अगे धरे, आप कटे चाहे काट ॥२॥
हीरा बीच बज़ार के, सब निरखें साहूकार।
जब लों जोहरी नांह मिले, सब की अक़ल खुवार ॥३
सती जो सत पर चढ़ गई, कर प्रीतम से प्यार।
तन मन अपना जारि के, मांह मिला दई छार ॥४॥
तन मन सौंपो गुरु अपने को, सत्य शब्द पहिचान।
मुश्किल से आसान हो गई, जब से सौंप दई जान ॥५॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, लीजो आप संभाल।
चेता जाय तो चेत बावरे, नातर खायगो कफनी काल॥

शब्द

वा घर कभी न जाना जी जाके हिरदे ही में पाप ॥टेक॥
मात पिता का कहा न माने, गुरुके नहीं वचन में।
पर तिरया से नेह लगावे, सुरती नहीं भजन में ॥१॥
कंचन मैला कभी न होवे, दाग़ रति न लागे।
गठरी उस की कौन छीन ले, पहरे अपने जागे ॥२॥
बाहर उजला अन्दर काला, बुगले का सा भेष।
बाहर मेल द्वेष हिरदे में, भक्ति लगे ना लेष ॥३॥
गुरु मुख सो तो पार उतर गये, भव सागर जल तरिया।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, हरि का सुमरण करिया ॥

शब्द

घायल ना जीवे, जाके लगे शब्द के सेल ॥टेक॥
लागी लागी सभी कहैं रे, लागी नाहीं एक।
लागी जब ही जानिये रे, घाव न आवे मेल ॥१॥
लागी उन को जानिये रे राज तजे अलवेल।
अन्दर दीवा चस रहा रे, घला प्रेम का तेल ॥२॥
पढ़ना लिखना है नहीं रे, सत् संगत का खेल।
चार वेद घट में बसे रे, साँचे गुरू से मेल ॥३॥
सत् संग सार अनेक हैं रे, काटें यम की बेल।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, झूठे जगत के खेल ॥४॥

शब्द

भजन बिन बावरे तैंने हीरा सा जन्म गंवाया ॥टेक॥
कभी न आया सन्त शरण में, ना कभी हरि गुण गाया।
बह बह मरा बैल नांई सोय रहा उठ खाया ॥१॥
ये संसार, हाठ बनिये की सब जग सौदा आया।
चातर माल चौगुना कीना मूरख मूल ठगाया ॥२॥
ये संसार फूल सेंभल का सूवा देख लुभाया।
मारी चौंच रुई निकस्याई मूण्डी धुन पछताया ॥३॥
ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कछू ना आया ॥४॥

शब्द

तन मन धन बाज़ी लागी रही ॥टेक॥
चौपड़ मांड़ो पीव से रे तन मन धन बाजी लाय।
हारी तो पोय की भई रे जीतू तो पिया मेरा रे ॥१॥
चार गली घर एक है रे वर्ण २ के लोग।
मनसा वाचा कर्मणा रे प्रीति निभैयो ओड़ ॥२॥
लख चौरसी भरम के हे पोह पर अटकी आय ।
जा अबके पोह ना पड़े है बहुरि चौरासी जाय ॥३॥
कहैं कबीर धर्म दास को हे जीत भई को हार।
अबके जो बाजी जीत जाय रे सोही सुहागन नार ॥४॥

शब्द

मेरी सुरत सुहागन जाग री ॥टेक॥
क्या तू सोवे मोह नींद में उठ के भजन बिच लाग री ॥१॥
अनहद शब्द सुनो चित देके उठत मधुर धुन राग री ॥२॥
चरण शीश धर विनती करयों पावै अचल सुहाग री ॥३॥
कहत कबीर सुनो म्हारी सुरतां जगत पीठ दे भाग री ॥४॥

शब्द

शब्द झड़ लाग्यो री बरसण लाग्यो रंग ॥टेक॥
जन्म मरण की चिंता भाग। समरथ नाम भजन लो लागी।
म्हारे सत्गुरु दीनो सैन सत्य घर पाय गयोरी ॥१॥
चढ़ी सुरत पश्चिम दरबाजा त्रिकुटी महल पुरुष एक राजा।
अनहद की झनकार बजे जहां बाजा री ॥२॥
अपने पिया संग जाकर सोई संशय शोक रहा नहीं कोई।
कट गये करम कलेश भरम भय भागा री ॥३॥
शब्द विहंगम चाल हमारी कहैं कबीर सत्गुरु दई तारी।
रिम झिम रिम झिम होय काल बश आय गयारी ॥४॥

शब्द

भजन में होत आनन्द आनन्द कट जांय यम के फंद मिट जांय सब दुःख द्वन्द ॥टेक॥

बरसें शब्द अमी के बादल भीजं महरम सन्त ॥१॥
कर अस्नान मग्न होबटैं चढ़ा शब्द का रंग ॥२॥
अगर बास जहां तत की नदियां बहत धारा गंग ॥३॥
तेरा साहिब है तेरे माहीं पारस पर से अङ्ग ॥४॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो जप ले ओंऽसोऽहं ॥५॥

शब्द

नारद मुनि मेरे सन्तों से अन्तर नाहीं (नारद मुनि ज्ञानी) टे० ॥
सन्त चलैं पाछे उठ चालू मोहि सन्तन की आशा ।
जहां मेरे साधु भजन करैं हैं वहीं हमारा बासा ॥१॥
साध जेमें जहां भोजन जेमू साध सोवें तहां सोऊं ।
जो कोई मेरा सन्त सतावे लाख जतन कर खोऊं ॥२॥
लक्ष्मी मेरी अर्ध शरीरी सो सन्तन की दासी ।
अठ सठ तीर्थ सन्तों के चरणा कोटि गया और काशी ॥
मन करम वचन चरण चित लावे सोई परम पद पावे ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो हरि अपने मुख गावे ।

शब्द

हमारे प्रभु अवगुण चित्त ना धरो ॥टेक॥
समदर्शी है नाम तिहारो चाहो तो पार करो ॥
इक नदिया इक नार कहावत मैलो नीर भरो ।
जब मिल गयो तब रूप एक भयो गंगा नाम परो ॥१॥

एक लोहा पूजा में राख्यो एक घर बधिक परयो ।
ऊंच नीच पारस नहीं जाने कंचन करत खरो ॥२॥
अब की बेर मोहे नाथ उबारो नहीं प्रण जात टरो ।
यह माया भ्रम जाल निवारो सूरदास सगरो ॥३॥

शब्द

लज्जा मेरी राखो ना श्याम हरी ॥टेक॥
कीनी कठिन दुशासन मोसे गह केसों पकरी ॥
आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नगन करी ।
पांचों पण्डा सभी बल हारे इन से कछु न सरी ॥१॥
भीष्म द्रोण बिदुर भये बिस्मय इन सब मौन धरी ।
अब नहीं मात पिता सुत बान्धव एक टेक तुमरी ॥२॥
बसन प्रवाह दिये करुणानिधि सेना हार परी ।
सूरदास जब सिंह शरण लई स्यारों की काहि डरी ॥३

शब्द

चले गये दिल के दामन गोर ॥टेक॥
जब सुध आवे तुमरे दर्श की उठे कलेजे पीर ॥१॥
नटवर भेष नयन तनारे सुन्दर श्याम शरीर ॥२॥
वृन्दावन वंशीबट त्याग्यो निर्मल जमना नीर ॥३॥
आपन जाय द्वारका छाये खारी नद के तीर ॥४॥
सब गोपियन को नेह बिसारो ऐसे भये बे पीर ॥५॥

सूरदास ललिता उठ बोली आखिर जात अहीर ॥६॥

शब्द

किन तेरो गोबिन्द नाम धरो ॥टेक॥
लेन देन के तुम हितकारी मोते कछु न सरो।
विप्र सुदामा कियो अयाचक तण्डुल भेट धरो ॥२॥
द्रुपद सुता की तुम पत राखी अम्बर दान करो ॥३॥
सन्दीपन के तुम सुत लाये विद्या पाठ पढो ॥४॥
सूर की बिरियां निठुर हो बैठे कानन मून्द धरो ॥५॥

शब्द

सब दिन होत न एक समान ॥टेक॥
एक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह, सम्पति मेरु समान।
एक दिन जाय श्वपच घर सेवत अम्बर हरत मशान ॥
एक दिन दुलह बनत बराती चहूंदिश ढूलत निशान।
एक दिन ड़ेरा होत जंगल में कर सूधे पग तान ॥
एक दिन सीता रुदन करत है महा बिपिन उद्यान।
एक दिन रामचन्द्र मिल दोऊ विचरत पुष्प विमान ॥
एक दिन राजा राज युधिष्टर अनुचर श्री भगवान्।
एक दिन द्रोपदी नग्न होत है बीर दुशासन तान ॥
प्रकटत है पूरव की करनी तज मन शोच अजान।
सूरदास गुण कहां लग बरनों विधि के अङ्क प्रमान ॥

शब्द

जिन्हों ने मन मार लिया मैं तो उन सन्तों का हूं दास ॥टेक॥
आपा मार जगत में बैठे नहीं किसी से काम ।
उन में तो कुछ अन्तर नाहीं सन्त कहो चाहे राम ॥१॥
मन मारा तन बस किया सभी भरम भये दूर ।
बाहर तो कुछ सूझे नाहीं अन्दर झलके नूर ॥२॥
प्याला पी लीया नाम का जी छोड़ा जगत का मोह ।
हम को सत्गुरु ऐसे मिल गये सहज मुक्ति गई होय ॥३॥
नरसो जी के सत्गुरु स्वामी दिया अमीरस प्याय ।
एक बूंद सागर में मिल गई कहा करे यम राय ॥४॥

शब्द

बंगला भला बना दरवेश जा में नारायण परवेश ॥ टेक ॥
पांच तत्व की ईंट बनाई तीन गुणों का गारा ।
छत्तीसों की छात बनाकर चिनगया चिनने हारा ॥ १ ॥
इस बंगले के दश दरवाजे बीच पवन का थम्भा ।
आवत जावत कोऊ न जाने देखो बड़ा अचम्भा ॥ २ ॥
इस बंगले में चौपड़ माडी खेलें पांच पचीस ।
कोई तो बाजी हार चला है कोई चला जुग जीत ॥ ३ ॥
इस बंगले में पातर नाचे मनुवां ताल लगावे ।
सुरत निरत के पहर घूंगरू राग छतीसों गावे ॥ ४ ॥

कहें मछन्दर सुन बाले गोरख जिन यह बंगला गाया।
इस बंगले के गाने वाला बहुर जन्म नहीं आया ॥ ५ ॥

शब्द

काम क्रोध मद लोभ मोह ने हो गुरु इनने मेरी मत मारी ॥टेक॥
केवल ब्रह्म रूप था मेरा पांच तत्व में लिया बसेरा।
इन्द्रिय आदि कर्म से लागी बुद्धि है सब से न्यारी ॥१॥
आदि जन्म का हूं अधिकारी दुःख में याद आई बुध सारी।
मनुवां खोज कनौज के देखा बिगड़ रही केशर क्यारी ॥२
शून्य समाधी में जाय समाया चेला गुरवां कुछ नहीं पाया।
आप ही आप पुकारत आया अब समझा मूरख सारी ॥३
सहज हो आसन अमर सिंहासन धुन में प्राण करै सुख वासन।
शरण मछन्दर गोरख बोले जान जान हुआ हितकारी ॥४

शब्द

अंखियां मोहन की बिन देखे रहा न जाय ॥टेक॥
जिन नयनन में श्याम बसत है दूजा नाहीं सुहाय ॥१॥
काजर रेख किरकिरा लागे सुरमा नाहीं ठहराय ॥२॥
मेरे अंगना में आय के रे मटकी लेत उठाय ॥३॥

और के डरते डरपत नाहीं जसुधा देख डराय ॥४॥
बंशी वारे मोहना बंशी नेक बजाय ॥५॥
तेरी बंशी ने मेरो मन हरो घर अंगना न सुहाय ॥६॥
सूरदास प्रभु तुमरे मिलन को हांरसों हेत लगाय ॥७॥

शब्द

भजो रे मन शुद्ध सच्चिदानन्द ॥टेक॥
सकल ब्रह्माण्ड पुकारें जिन को अनन्त अपार अखण्ड ॥१॥
पुष्प कुमार गगन में तारे वरणत सूरज चन्द ॥२॥
सभी वस्तु की सुन्दरतायें जितलावें गोविन्द ॥३॥
ओंकार अज ज्योति स्वरूपा पूरण परमानन्द ॥४॥

शब्द

तेरा यह खेल अपारा है जित देखूं तित तू ही तू है ॥टेक॥
तुही बन में तुही घर मन्दिर में कूप बावरी तूही सरवर में।
तुही सब का करतार भरम से न्यारा है ॥१॥
इन्द्रियों में देखा तूही मन है शुद्ध करण में तूही पवन है
धरणों में तूही वरुण जलों में गंगा धारा है ॥२॥
ज्ञानी में ब्रह्म ज्ञान तूही है योगी का मुख ध्यान तुही है ॥

सबका जीवन प्राण तूही आधारा है ॥३॥
फूल पात फल डार तूही है कालों का महाकाल तुही है।
परमानन्द प्रकाश शब्द ओंकारा है ॥४॥

शब्द

मारग में लूटैं पांच जनो॥टेक॥
पांच पचिसों ने घेरा घाटा साधु जन चढ़ गये उलठी बाटा।
घेर लिया सब औघट घाटा कलियुग चमके सेल अनी ॥१॥
बन में लुट गये मुनि जन नागा डस गई ममता उलटा भागा।
जा के कान गुरु ना लागा भृङ्गी ऋषि सै आन बनी ॥२
आशा तृष्णा नदीयां मारी बह गये संत बड़े डिमधारी।
जो उभरे सो शरण तिहारी पार लगाइयो आप धनी ॥३॥
शंकर लुट गये नेजा धारी परजा रैयत कौन बिचारी.
भूल पड़ी कर्मन की मारी तिरगुण झुक रही तीन अनी ॥४॥
रामानन्द दिया गुरु हेला दास कबीर चरणन का चेला।
बंका मार्ग पंथ दुहेला सुमरो सिरजनहार धनी ॥५॥

शब्द

अरी एरी ऊदां लागी का नाम न ले ॥ टेक ॥
जल से प्रीत करी मछली ने तड़फ तड़फ जिया दे ॥१॥

नादां से प्रति लगी मिरगां की सन्मुख सेल सहे ॥ २॥
दीपक से प्रीत पतंग की लागी वार फेर जिया दे ॥३॥
मीरां की प्रीत लगी है सन्तों से गुरु चरणों चित्त दे ॥ ४॥

शब्द

रघुबर तुम को मेरी लाज ॥ टेक॥
सदा सदा मैं शरण तिहारी तुम हो ग़रीब निवाज़ ॥ १ ॥
पतित उधारण विरद तिहारो श्रवण सुनी अवाज़ ॥ २ ॥
हूं तो पतित पुरातन कहियो पार उतारो ज़िहाज़ ॥३ ॥
अघ खण्डन दुःख भंजन जन के यही तिहारो काज ॥ ४॥
तुलसीदास पर किरपा करियो भक्ति दान दो आज ॥५॥

शब्द

सिया रघुबीर भरोसो ऐसो ॥ टेक ॥
बारि न बोरि सक्यो प्रहलादहि, पावक नाहीं जरयोसो ।
गिरी ऊपर ते डारि दियो है भूमि पर उबरयो सो ॥ १॥
हिरणाकुश प्रहलाद भक्त से हठ कर वैर करयोसो ।
मारयो चाहे दास नर हरि को आप ही दुष्ट मरयोसो ॥२॥
आरयो लंका अञ्जनी नन्दन देखत पुर सगरयोसो ।

ताके मध्य विभीषण को गृह राम कृपा उबरयो सो ॥३॥
रावण सभा कठिन प्रण अङ्गद हिय धर हरि सुमरयोसो।
मेघनाद सम कोटिन योधा लागे पग न टरयोसो ॥ ४ ॥
गज और ग्राह लड़ें जल भीतर गज को ग्राह गह्योसो।
गरुड़ छोड़ हरि प्यादे ही आये डूबत गज उबरयो सो ॥५॥
विप्र सुदामा फिरत दुःखी होय कबहू न उदर भरयो सो।
राम कृपा कंचन गृह पाये हय गज बाज खड़यो सो ॥६॥
द्रुपद सुता को चीर दुशासन राज सभा पकरयोसो!
ऐंचत ऐंचत भुज बल हारे नेक न अङ्ग उघरयोसो ॥ ७ ॥
भारत में भंवरी के अण्डा छोहनी दल बटरयोसो।
राम नाम जब पक्षि टेरयो घंटा टूटि परयोसो ॥ ८ ॥
मीरां के मारण के कारण घोरयो ज़हर खरयोसो।
रामकृपा ते अमृत ह्वगयो हंस हंस पान करयोसो ॥ ९
तुलसीदास विश्वास राम पद जो नर नारी नरयो सो।
और विभूति कहां लग वरणों जेहि यमराज डरयोसो ॥ १०

शब्द

जगदीश्वर तुम्हारा सहारा हमें यहां दीखे न कोई हमारा हमें।
सर्व यातना के संकट से करके कृपा जो उबारा हमें ॥
सदा रह्यो साथी गट भीतर पल भर भी करते न न्यारा हमें।
जो कुछ सुख तुम देहु दया कर क्या कोई देगा बिचारा हमें ॥

धर्मदास कहे भव वारिध से पार कबीर उतारा हमें ॥ ५ ॥

शब्द

वा घर जय्यो हे नींद जा घर राम नाम नहीं भावे ॥ टेक ॥

बैठ सभा में मिथ्या बोले निन्दा करे पराई ।
वह घर हम ने तुझे बताया जाय्यो बिना बुलाई ॥ १ ॥
के तू जाय्यो राज द्वारे के रसिया रस भोगी ।
हमारा पीछा छोड़ बावरी हम हैं रमते जोगी ॥ २ ॥
ऊंचा मन्दिर धौर सखीरी जहां कामिन चंवर डुलावे ।
हमरे संग क्या लेगी बावरी पत्थर पर दुःख पावे ॥३
कहें भरतरी सुनरी निद्रा यहां नहीं तेरा बासा ।
हमतो रहते राम भरोसे गुरु मिलने की आशा ।॥४॥

शब्द

राम ज्यों राखे त्यों रहिये ॥ टेक ॥

जो प्रभु करे भला कर माने व बहु बुरा ना कहिये ॥ १ ॥
हरि होनी अनहोनी भी कर दे सो सब सिर पर सहिये ॥२॥
कर कृपा निज नाम ध्यावे सों अन्तर ले गहिये ॥ ३ ॥
महरदास हरि हुकम माने यह सेवक को चहिये ॥ ४ ॥

प्रार्थना

इतना तो करना स्वामी जब जान तन से निकले।
गोविन्द नाम कह कर मेरे प्राण तन से निकले ॥ टेक ॥
श्री गंगाजी का तट हो या यमुना जी का बट हो।
और सांवरा निकट हो फिर प्राण तन से निकले ॥ १
श्री वृन्दावन का स्थल हो मेरे मुख में तुलसीदल हो।
विष्णु चरण का जल हो फिर प्राण तन से निकले ॥२
सन्मुख सांवरा खड़ा हो बंशी का सुर भरा हो।
तिरछा चरण धरा हो फिर प्राण तन से निकले ॥ ३
शिर सोहना मुकट हो मुखड़े पै काली लट हो।
यही ध्यान मेरे घट हो फिर प्राण तन से निकले ॥ ४
उस वक्त जल्दी आना ना क़ौल भूल जाना।
नूपुर को धुनी सुनाना फिर प्राण तन से निकले ॥ ५
मेरे प्राण निकलें सुख से तेरा नाम निकले मुख से।
बच जाऊं घोर दुख से फिर प्राण तन से निकले ॥ ६
जब कण्ठ प्राण आवे कोई रोग ना सतावे।
तू दर्श यदि दिखावे फिर प्राण तन से निकले ॥ ७ ॥
यह नेक सी अरज़ है मानो तो क्या हरज है।
कुछ तेरा भी फ़रज है फिर प्राण तन से निकले ॥ ८

शब्द

तेरा पिंजरा बना है अमोल निरख पिंजरे ने भाई ॥ टेक ॥
इस पिंजरे में तोता मैना सोऽहं सोऽहं बोलत बैना ।
सुरत निरत को डाट शब्द में चितलाई ॥१॥
पचों मार पचीसों वश में इन पांचों को करले रस में ।
शून्य शिखर को खोज भरम तेरा मिटजाई ॥ २ ॥
खंब गड़े हैं बड़े रसीले बन्ध मत समझे इनको ढीले ।
लगी पवन की गांठ खम्ब में उलझाई ॥३॥
जो सत्गुरु की शरणा आवे मंगल मूल परम पद पावे ।
हो तुर्या असवार मिटे आवा जाई ॥४॥

शब्द

बम बम्भोलेनाथ शिवनाथन के नाथ
आज मेरी कामना पूरण करो ॥टेक॥
मेरे बाबे की झोली में क्या क्या चीज ।
लोंग सुपारी धतूराका बीज ॥ १ ॥
कोई बजावे शंख घड़ावल कोई बजावे ताल ।
कोई मांगे खड़ा होकर गोदी में का लाल ॥ २ ॥
कोई चढ़ावे बेल पत्र कोई चढ़ावे भंग ।
बैल की सवारी कीनी पारवती के संग ॥ ३ ॥

शब्द

कैसे जोऊंरी मेरी माई, हरि बिन कैसे जिऊंरी ॥ टेक॥
उदक दादुर मीनवत है जल से ही उपजाई ।
पल एक जल कूं मीन बीसरै तड़फ २ मर जाई ॥ १॥
पिया बिन पोली भई रे बाला ज्यों काठ घुन खाई ।
औषध मूल न संचरै रे वैदा फिर २ जाई ॥ २॥
उदासो होय बन २ फिरूं रे विथा तन छाई ।
दास मीरां लाल गिरधर मिलया है सुखदाई ॥ ३॥

शब्द

बिर यो तो रंग गाढ़ा लगा मेरी माय दूजा नहीं सुहाय ॥टेक
पोया प्याला अमर रस का चढ़ गई घूम घुमाय ।
यो तो अमल म्हारो कबहु न उतरे कोट करो न उपाय ॥ १
सांप टिपारो राणा जी भेज्यो यो मेड़तणी गल डार ।
हंस हंस मीरां कंठ लगायो यो तो म्हारे नौसर हार ॥ २
विष को प्यालो राणा जी मेल्यो यो मेड़तणी ने प्याय ।
कर चरणामृत पी गई रे गुण गोविन्द रा गाय ॥ ३
पोया प्याला नाम का रे और न रंग सुहाय ।
मीरां कहै प्रभु गिरधर नागर काचो रंग उड़ जाय ॥ ४

शब्द

नैना लोभी रे बहुरि सकै नहीं आय ॥ टेक ॥
रोम रोम नख सिख सब निरखत ललच रहे ललचाय ॥
मैं ठाढ़ी गृह आपणे रे मोहन निरखत आय ।
सारंग ओट तजे कुछ अंकुस बदन दिये मुसकाय ॥ १ ॥
लोक कुटम्बी बरज बरज हो बतियां कहत बनाय ।
चंचल चपल अटल नहिं मानत पर हाथ गये बिकाय ॥ २
भली कहो कोई बुरी कहो मैं सब लई सीस चढ़ाय ।
मीरां कहे प्रभु गिरधर के बिन पल भर रह्यो न जाय ॥ ३

शब्द

भज मन राम चरण सुख दाई ॥ टेक ॥
जेहि चरणन सी निकसी सुरसरी, शंकर जटा चढ़ाई ।
जटा शंकरी नाम परयो है त्रिभुवन तारन आई ॥ १
जेहि चरणन को चरण पादुका भरत रह्यो लव लाई ।
सोई चरण केवट धो लीने तब हरि नाव चलाई ॥ २
सोई चरण सन्त जन सेवत सदा रहत सुखदाई ॥
सोई चरण गोतम ऋषि नारी परस परम पद पाई ॥ ३
दण्डक वन प्रभु पावन कीन्हों ऋषियन त्रास मिटाई ।
सोई प्रभु त्रिलोक के स्वामी कनक मृगा संग धाई ॥ ४

ऋषि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल तिन जय छत्र धराई ।
रिपु को अनुज विभीषण निशिचर पर सत लंका पाई ॥५
शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक शेष सहस्र मुख गाई ।
तुलसीदास मारुत सुत की प्रभु निज मुख करत बड़ाई ॥६

शब्द

आये आये विदुर घर पावना जी ॥टेक॥
विदुर नहीं घर थी विदुरानी आवत देखे शारंग पाणी ।
फूली अंगन आवे चिन्ता भोजन कहा जिमावना जी ॥१॥
केला एक प्रेम से लाई गिरी गिरी सब देत गिराई ।
छिलका देत श्याम मुख मांहीं लागे परम सुहावनाजी ॥२॥
इतने मांहीं विदुर जी आये, खोटे खारे बचन सुनाये ।
छिलका देत श्याम मुख मांहीं कहां गमाई भावनाजी ॥३॥
केला विदुर लिये हाथों मांहीं गिरादेत गिरीधर मुख मांहीं
कहैं कृष्णजी सुनो विदुर जी, सो सवाद नहीं आवनाजी ॥४
बासी कूसे रूखे, सूखे हम हैं विदुर जी प्रेम के भूखे ।
धन्य २ गोप व्रज नारी, कृष्ण विदुर घर पावना जी ॥५॥

शब्द

सांवरे संग खेलो ना होरी, पुरुषोत्तम संग खेलोना० ॥टेक॥

सास ननद दौरनियां जठनियां केते हि नाम धरो री।
समुझाई बरजी नहीं मानूं होनी होय सो होय री,
मेरी मन हरि से लगो रो ॥१॥
सुनियो री मेरी अगड़ परौसन कहो अब कैसे करो री।
बिन हरी फाग आग सी लागत तन मन जात जरो री।
प्राण नहीं मानत मोरी ॥२॥
चलो सब हिल मिल कर बिनती करैं सीस नाए कर जोरी।
माने तो माने नहीं करैं वारा जोरी पकड़ेंगी नवलकिशोरी ।
ऐसो कहा सब से बड़ोरो ॥३॥
भक्ति की मांग प्रेम का सिन्दूरा सत की मंहदी रचोरी।
मन मन के कर माला करलो ज्ञान की गाति कसोरी।
ध्यान की ओट मिलोरी ॥४॥
नक बेसर चून्दर पहनाओ केसर रंग कर बोरी।
मल के गुलाल श्याम के मुख सू निर्भय कहो होरी होरी।
तभी ज.वन भलोरी ॥५॥

शब्द

सब जग रोगिया रे जिसने सत् गुरु वैद्य न जाना ॥ टेक ॥
जन्म मरण को रोग लग्यो है तृष्णा रूपी खांसी।
आवागमन की डोर गले बिच पड़ी काल की फांसी ॥ १ ॥

सच्चा गुरु कोई ना पूजे झूठा जग पतियावे।
अन्धे बांह गही अन्धे की मारग कौन बतावे ॥ २ ॥
सतगुरु शब्द संजीवन बूटी जो घिस अङ्ग लगावे ;
कहैं कबीर सुनो भाई साधो बहुर जन्म नहीं आवे ॥ ३ ॥

शब्द

दाता एक राम भिखारी सारी दुनियां ॥ टेक ॥
राजा चढ़े रण घण दुर्जन धुनियां।
समर समूह पै दोऊ ओर सुर मुनियां ॥ १ ॥
चोर चले चोरी करण ठग ठान ठनियां।
साहूकार रोकड़ बांधे लाद चले बनियां ॥२॥
जोगी जती जोग साधें जपैं माला मनियां।
अञ्जली पसार मांगे बढै ज्ञानी गुनियां ॥ ३ ॥
कोई नाचे गावे कोई तोड़े तान तनियां।
भजन भरोसे भीषण दास उन मुनियां ॥ ४॥

शब्द

गुरवां संग मेला है सुनियो सन्त सुजान ॥ टेक ॥
प्रेम नगर की औघट घाटी, निर्भय पन्थ दुहेला है ॥ १ ॥
लोक लाज कुल की मर्यादा, शीश दिया सो चेला है ॥ २ ॥
उलटी पवन शिखर घुन लागी ; धर रहा ध्यान अकेला है ॥३

पाप पुण्य से न्यारा रहता, सतगुरु आप नहेला है ॥ ४ ॥
घीसा सन्त कहै सुनो साधो, बाहर भीतर खेला है ॥ ५ ॥

शब्द

सजन घर चलो सुहाग भरी ॥ टेक ॥
शब्द की डुलियां पांच कहार, चरण धरो हे बिचार बिचार ॥
पांच मवासी घोड़े असवार, ज्ञान खड्ग ले हांले हुशियार ॥२
इस मक्के की छोड़ दे रीति, पार ब्रह्म से जोड़ो प्रीति ॥ ३
कहे कबीर आगे उनके भाग, मिल गये सतगुरु दिया है सुहाग ॥

शब्द

काहे सोच करे नर मन में वह तेरा रखवारा है रे ॥ टेक ॥
गर्भ वास से जब तू निकला, दूध कुचन में डारा है रे।
बालापन में पालन कीनों, माता मोह दुबारा है रे ॥ १ ॥
अन्न रचा मनुजों के कारण, पशुओं के हित चारा है रे।
पक्षी बन में पान फूल फल, सुख से करत अहारा है रे ॥ २ ॥
जल में जलचर रहत निरन्तर, खावें मांस करारा है रे।
नाग बसें भूतल के माहीं, जीवत वर्ष हजारां है रे ॥ ३ ॥
स्वर्ग लोक में देवन के हित, बहत सुधा की धारा है रे।
ब्रह्मानन्द फिर सब तज कर, सुमरो सिर्जन हारा है रे ॥ ४ ॥

शब्द

कुटुम्ब तज शरण राम तेरी आयो।
तज घर लंक महल और मन्दिर नाम सुनत उठ धायो ॥टेक॥
भरी सभा में रावण बैठयो चरण प्रहार चलायो।
मूर्ख अन्ध कह्यो नहीं माने बार बार समझायो ॥ १ ॥
आवत ही लंका पति कीनों हरि हंस कंठ लगायो।
जन्म जन्म के मिटे परामव राम दर्श जब पायो ॥ २ ॥
हे रघुनाथ अनाथ के बन्धु दीन जान अपनायो।
तुलसीदास रघुबर की शरणा भक्ति अभय पद पायो ॥३॥

शब्द

नहीं छोडू रे बाबा रामनाम, मेरो और पढन सों नहीं काम ।टेक
प्रहलाद पठाये पठन शाल, संग सखा बहु लिये ग्वाल बाल।
मोकोकहापढ़ावत आलजाल, मेरीपटिया पै लिखदेऊ श्रीगोपाल
यह षंडा मकै कह्यो जाय, प्रहलाद बुलायो वेग धाय।
तू राम कहन को छोड़ बाल तुझे तुरत छुड़ाऊं कह्यो मान ॥२
मोको कहा सतावो बार बार, प्रभु जलथल नभ कीन्हें पठार।
एक राम न छोडूं गुरुहिगांर, मोहे बाल जार चाहे मारडार ॥३
काढ खड्ग कोप्यो रिसाय, तुझे राखन हारो मोहि बताय।

प्रभु खम्ब से निकसेहोविस्तार, हिरणाकुश छेद्यो नखविदार ॥
श्री परम पुरुष देवाधि देव, भक्त हेत नरसिंह भेष ।
कहे कबीर कोऊ लखे न पार, प्रहलाद उबारे अनेक बार ॥ ५॥

शब्द

संकट काट मुरारी हमरे संकट काट मुरारी ।
संकट में इक संकट उपज्यो अरज करै मृगनारी ॥ टेक
इक ढिंग बाघर जाय गडरिया, इक ढिंग श्वान विहारी ।
इक ढिंग जाय अङ्ग साडी, इक ढिंग जा बैठयो फन्दकारी ।
उलट पवन बागर को लागी, श्वान भयो संसकारी ।
बांबी से भुजंग जो निकस्यो, ताहि डस्यो फन्दकारी ॥ २ ॥
नाचत कूदत हिरनी निकसी, भलो कियो गिरधारी ।
सूरदास प्रभु तुमरे दर्श को, चरण कमल बलिहारी ॥ ३ ॥

शब्द

म्हाने पार उतारो जी थाने थारी निज भक्तांरी आन ॥ टेक ॥
हमारो अवगुण नेक न चितवो, अपनो ही कर जान ॥ १ ॥
काम क्रोध मद लोभ मोह वश, भूलो पद निर्बान ।
अबतो शरण गही चरणन की, मत दीजो मोहे जान ॥ २ ॥
लख चौरासी भटकत भटकत, मोरी पड़ी पिछान ।
भवसागर में बह्यो जात हूं, रखिये श्याम सुजान ॥ ३ ॥

हूं तो कुटिल अधम अपराधी, ना सुमरयो तेरो नाम ।
नरसी के प्रभु अधम उधारन, गावत वेद पुरान ॥ ४ ॥

शब्द

छवि दिखला जा प्यारे मोहना मैंनू बंशी दी तान सुनाजा ॥टेक
तैंनूं ब्रजदीयां नारियां प्यारियां वे,
ओत्थे हुड्डियां कुब्बियां तारियां वे ।
कभी भुल्ल के पंजाब बिच आजा मोहना ॥ १ ॥
तैंनू मेरी जेइयां बहतेरियां वे,
पर मैंनू इक्क टंगा टेरियां वे ।
मेरी तलड़ी दी प्यास बुझाजा मोहना ॥ २ ॥
तू घर आ मेरे ब्रज बासियां वे,
बन्दी तेरे दरश दी प्यासियां वे ।
ऐसी प्यासी नू पानी पिला जा मोहना ॥ ३ ॥
मेरे ऐबों पै रुखना दे साइयां वे,
मेरी मांफ कर सब ही बुराइयां वे ।
चरणदास नू पार लगा जा मोहना ॥ ४ ॥

शब्द

आजारे मोहन आजा लीला मय लीला दिखा जा ॥ टेक ॥

शुभ गीता का ज्ञान सुनाजा, कर्म वीर बनना बतला जा ॥
वीणा ध्वनि सुना जा ॥

अभिमानी का मान घटा जा, निरंकुशों की शान घटा जा।
विमल ज्ञान भण्डार लुटा जा, प्रेम पियूष पिलाजा ॥ २ ॥
भारत को स्वातन्त्र्य दिलाकर, दास प्रथा का अन्त कराकर ।
मातृ भूमि को धीरज देकर, कुछ तो दुःख मिटा जा ॥ ३ ॥
भीख मांगना भारत छोड़े पाप कर्म से मुख को मोड़े ।
सत्य धर्म से नाता जोड़े, जीवन ज्योति जगा जा ॥ ४ ॥
गोकुल वृन्दावन में आ कर. दधि माखन का चोर कहा कर ।
दूध दही का स्रोत बहा कर, ऊधम फेर मचा जा ॥ ५ ॥
यह प्राचीन उमंग नहीं है निर्मल प्रेम तरङ्ग नहीं है ।
सच्चा सुख दिखता नहीं है. किञ्चित् दया दिखा जा ॥ ६ ॥
मांगे हम लक्ष्मी मत देना, यश वैभव मांगे मत देना ।
केवल मंजुल रूप दिखा कर, किंचित हृदय जुड़ा जा ॥ ७ ॥
माधव जो तू नहीं आयेगा, इस प्रकार जो तरसावेगा ।
निश्चय ही तू पछतावेगा, प्रणयी नेह निभा जा ॥ ८ ॥

शब्द

हो नाथ म्हारो कांई बिगरेगो नाथ जी ।
हो मेरे स्वामी लाजेगो विरद तिहारो ॥ टेक ॥

औरां के पति एक है मैं पांच पत्यां की नारि जी।
उन पांचों ने त्याग दई हूं थे मत त्यागो बनवारी ॥ १ ॥
कैरू कपट रच्यो दुर्योधन मन में यही तो विचारी जी।
जीत लिये पांचों पाण्डव छटी द्रोपदी नारि ॥ २ ॥
केश पकड़ कर ल्यायो सभा में लास तो दिखायो मोहे भारी जी।
दुर्योधन बदनीत भयो है देखन चाहे उघारो ॥ ३ ॥
अब तक नाथ मेरो कछु नहीं बिगरो द्रोपद दीन पुकारी जी।
सहाय करो प्रभु थे भगतां की कहां गयो बेर तो हमारी ॥४॥
गदगद बैन नत जल छायो कृष्ण ही कृष्ण पुकारी जी।
फिर आवोगे लाज मरोगे दासी को देखोगे उघारी ॥ ५ ॥
सुन विनती प्रभु आय गये तब नख पर गिरवर धारी जी।
चीर में प्रवेश भयो है खैंचत खैंचत हारी ॥ ६ ॥
महाभारत में कथा लिखी है श्री वेदोव्यास जी उचारी जी।
कहैं कालूराम सुनो भाई धन्ना आ पहुंचे बनवारी ॥ ७ ॥

शब्द

ऊधो कहत न कछु बन आवे ॥टेक॥
सिर पर सौत हमारे कुबजा चाम के दाम चलावे ॥१॥
उन कछु मन्त्र पढयो चन्दन में ताते श्याम ही भावे ॥२॥
अपने रंग ही रंग्यो सांवरो शुक ज्यों बैठ पढावे ॥३॥

छांड्यो नेह हेत गोकुल स्यों लिख २ योग पठावे ॥४॥
विसरेउ शेष असुर की दासी अब कुल बधु कहावे ॥५॥
ज्यों नटनो लघु हाथ लकुट लै कपि ज्यों नांच नचावे ॥६॥
सूरदास प्रभु जरी बहुत दुःख ता पर लौन लगावे ॥७॥

शब्द

सो नैना मेरे तुरिया तत पद अटके ॥टेक॥
सुरत निरत की गम नहीं सजनी जहां मिलन को लटके ॥
भूलो जगत बकत कछु औरे बेद पुराणन ठटके ॥
प्रीति रीति की सार न जानै डोलत भटके भटके ॥
किरया कर्म भर्म उरझेरे ए माया के भटके ॥
ज्ञान ध्यान कछु पहुंचत नाहीं राम रहीमा फटके ॥
जग कुल रिति लोक मर्यादा मानत नाहीं हटके ॥
चरण दास शुक देव दयासों त्रैगुण तज के सटके ॥

शब्द

ऊधो अब नहीं श्याम हमारे ॥टेक॥
मधु बन बसत बदल से लीने माधो मधुप तिहारे ॥१॥
इतने हीं दूर भये कछु और ही जो जोइ मगु हारे ॥२॥

कपटी कुटिल काक कोयल ज्यों अन्त भये उड़न्यारे ॥३॥
रस ले भंवर जाय स्वारथ हित प्रीतम चित्त न बिसारे ॥४॥
सूरदास तिन सें का कहिये जे तन हूं मन कारे ॥५॥

शब्द

उधो मन तो नहीं हैं दस बीस ,
एक मन को लै गयो सांवरो कौन भजै जगदीश ॥टेक॥
भई अति शिथल सभी माधव बिन जैसे देह बिन शीश ।
श्वास अटक रहे आशा माहिं जीवहूं कोटि बरीस
तुम तो सखा श्याम सुन्दर के सकल योग के ईश ।
सूरदास रसिक की बतियां पुरबो मन जगदीश ॥

शब्द

टुक रंग महल में आव की निगुर्ण सेज बिछी ॥टेक॥
जहां पवन गवन नहीं होय जहां जाय सुरति बसी ॥
जहं त्रयगुण बिन निर्वाण जहां नहीं सूर शशी ॥
जहां हिल मिल के सुखमान मुक्ति की होय हंसी ॥
जहं पिय प्यारी मिलि एक कि आसा दुई नशी ॥
जहं चरणदास गलतान कि शोभा अधिक लसी ॥

शब्द

तुही एक अनेक भयो है प्रभु जी अपनी इच्छा धार ॥टेक॥
तुही सिरजे तूही पाले तूही करे संहार।
जित देखूं तित तूही तू है तेरा रूप अपार ॥१॥
तूही रामनारायण तूही तूही कृष्ण मुरार।
साधों की रक्षा के कारण युग २ ले अवतार ॥२॥
तुही आदि अरु मध्य तुही है अन्त तेरो उजियार।
दानव देव तुम ही से प्रकटे तीन लोक बिस्तार ॥३॥
जल थल में व्यापक है तूहीघट २ बोलन हार।
तो बिन और कौन है ऐसे ज्यासों करूं पुकार ॥४॥
तूही चतुर शिरोमणी है प्रभु तूही पतित उधार।
चरणदास सुखदेव तूही है जीवन प्राण अधार ॥५॥

प्रार्थना

अयि विभो करुणेश स्वामिन् क्षमस्वितोसि दयानिधे ॥ टेक ॥
देहि निज पद पद्म भक्तिं तारयाशु भवाम्बुधे ॥
यादवाभिजनेन पूर्णे नाविता वसुधा त्वया ॥
नाशिता शिशुपाल कंस जरा सुताद्य सुरामृधे ॥
त्वद्वियोगमवाप्य भारत भूमिरधुना पीड़िता ॥

पात्रता नुपयास्यतीश कदा तवानुग्रह विधे॥

शब्द

श्याम का संदेशा ऊधो पाती लेके आयो री ॥टेक॥

पाती तो उठाय लीनी छाती सौं लगाय लीनी।
घूंघट की ओट देके ऊधो समझायो री ॥१॥

बसती उजाड़ दीनी उजड़ी बसाय लीनी।
कुब्जा पटरानी कीनी मोहे ना सुहायो री ॥२॥

सूरश्याम जू के आगे ऐसे जाय कहियो ऊधो।
जीवत खसम किन भस्म रमायो री ॥३॥

कहा करूं सुनो यह गोकुल हरि बिन न सुहायो री।
सूरदास प्रभु कौन चूकते श्याम सुरत बिसरायो री ॥४॥

शब्द

बाणा बदलै सौ सौ बार बदले बाण तो बेड़ा पार ॥टेक॥

सोना चांदी चौंच मंढ़ाई किया हंस की लार।

काका बाण कुबाण न छोड़ें इत सत्संङ्ग लाचार ॥१॥

युग युग सींचो दूध अरंड को लागैं नाहिं अनार।

चूर चूर कर डारो चन्दन तजे नहीं महकार ॥२॥

सज्जन के मुख अमी बसत है जब बोलै तब प्यार ।
दुर्जन का मुख बन्द कर रखियो भट्ठी भरे अङ्गार ॥३॥
अपनी करणी आप कहत हूं नहीं और सिर भार ।
शम्भूदास वा घड़ी धन्य जब सुमरो सिरजन हार ॥४॥

शब्द

हरि को सुमर संकट हरण ॥टेक॥
कोटि कष्ट निवार तारण जगपति पोषण भरण ।
भक्ति पूर्ण देखी निश्चल अनवन बांधो परण ॥१॥
अग्नि में प्रह्लाद राखो दियो नाहीं जरन ।
गिरि शिखर से डारि दीन्हों लगो करुणा करन ॥२॥
दीन जानि संभार लीन्हों कियो ठाढो धरन ।
खम्भ बांधो खड्ग काढो दुष्ट लागो अरन ॥३॥
अब बता तेरो राम कित है गहो वाकी शरन ।
ढीठ हो प्रह्लाद भाष्यो डारि शंका डरन ॥४॥
मोमे तोमे खड्ग खम्भ में मध्य नारि नरन ।
खम्भ फाड़ कर भये परगट धरो नरसिंह वरन ।
मोहि गुरु शुकदेव कहिया सेव सोई चरन ।
चरणदास उपासना दृढ होय तारण तरन ॥६॥

शब्द

दलाली लालन की म्हारे सत्गुरु दई है बताय ॥टेक॥
लाल लाल सब कोई कहें रे सब की गठरी लाल।
खोल गांठ देख्यो नहीं या विधि रह्यो कंगाल ॥१॥
दिल्ली के बाजार में लाल ही लाल विकांय।
सुगरे सुगरे सौदा करते नुगरे फिर फिर जांय ॥२॥
लाल पड़्यो मैदान में रे खलक उलांघे जाय।।
नुगरे ठोकर मारिया रे सुगरे न।लियो उठाय ॥३॥
ज्यों महदी के पात में रे लाली रही समाय।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो आवागमन मिट जाय ॥४

शब्द

अलख संग मिलियो रे तुम चलो दिवाने देश ॥टेक॥
सन्त सदा उपदेश बतावें घट अन्दर दीदार लखावें।
तन मन अर्पण करियो रे ॥१॥
पहले पहर सुघर नर जागे चार चौक अनहद से आगे।
अब चल कबहुं न चलियो रे ॥२॥
शब्द विहंगम बाजैं तूरा कोटि भानु जहां भभके नूरा।
बंक नाल सुध करियो रे ॥३॥

सुखमन देश विहंगम सेरी माया गस्त फिरे चहुं फेरी।
भरम भूल मत रहियो रे ॥४॥
इस पद का कोई भेद निहारे कहै कबीर रैदास बिचारे।
नाम का व्योहारो कोई मिलियो रे ॥५॥

शब्द

मधुकर कौन मनायो माने ॥टेक॥
अविनाशी अति अगम अगोचर कहा प्रीति रस जाने ॥१॥
सिखवो जाय समाधी की बातें जहाँ हो लोग सयाने ॥२॥
हम अपने ब्रज ऐसे ही बसैं हैं बिरह बाय बौराने ॥३॥
जाके तन धन प्राण सूर हरि मुख मुसकान बिकाने ॥४॥

शब्द

जतन बिन मिरगां न खेत उजारा ॥टेक॥
पांच मिरग पच्चीस मिरगनी तामें तीन चिकारा
अपने अपने रस के भोगी चुग रहे न्यारा न्यारा ॥१॥
उठ के झुंड मृगां के आये बैठे खेत मंझारा।
हो हो करत बालि ले भागा मुख बाये रखवारा ॥२॥
मारै मारै टरे नहीं टारे बिडरे नाहीं बिडारा।

अरि हि प्रपंच महा दुःख दाई तीन लोक पचि हारा ॥३॥
ज्ञान का भूला सुरती का चूका गुरु शब्द रखवारा।
कहै कबीर सुना भाई साधो विरले भले सहारा ॥४॥

शब्द

सभी तो मिल राम भजो नर नारी ॥टेक॥
जन प्रह्लाद पिता तज दीया भरत तजी महतारी।
हरि के भजन से गणिका तर गई तर गई गौतम नारी ॥
भवसागर की लहर कठिन है किस विधि उतारेगे पारी।
मीरां के प्रभु गिरधर नागर हरि के चरण बलिहारी ॥

शब्द

कन्हैया दुःख हरैया जी तुम ही से ली लगायेंगे ॥टेक॥
हटा कर सब से मन अपना कि वृन्दावन को जायेंगे।
सुनी है यह खबर तुमरी कि वृन्दावन में रहते हो ॥
बहुत बैचेनी है मन को दर्श जब तक न पायेंगे।
तुम्हारी माया तो देखी मगर तुम को न देखा है।
जो हो जावे दर्श तुमरा तो निश्चय मोक्ष पायेंगे ॥
वह बंशी भी सुना दीजे भरी जादू की जो है तुम पै।

मिटावो सब यह अभिलाषा हम तेरा गुण गायेंगे ॥
तुम्हीं दुःख के हरैया हो तुम्हारे हाथ है डोरी।
भला वांके विहारी तुम सिवा हम किस पै जायंगे ॥

शब्द

फिर आकर के इस भारत में,
निज सांवरी सूरत दिखा तो सही ॥टेक॥
वो अगाथ प्रभाव भरी वंशी,
यमुना तट नेक बजा तो सही ॥
गो धूमरी धूसरी रोती खड़ी॥
जिन्हें रोज चराते थे ले कर छड़ी।
उन पै है पड़ी तकलीफ बड़ी,
उसे दौड़ के शीघ्र हटा तो सहो ॥
बिन आप के हालत ऐसी हुई,
घृत दूध माखन बिना सब शक्ति खुई।
प्रभु माखन व मिश्री ये दूई,
खिलवा बलवान बना तो सही ॥
हम कायर क्रूर हैं पाप भरे,
कर्तव्य भी भूल गये सगरे।
अब लेकर के अवतार हरे,

हमें मञ्जुल गीता सुना तो सहो ॥
प्रिय माधव मैं कर जोर कहूं,
कबलों करुणा निधि दुःख सहूं ।
सही पीर कहां तक मौन अहूं ।
अब आकर कष्ट मिटा तो सही ॥

शब्द

दास परै दया लावो रे दयालु देवा दास परे दया लाओ ।
संसारी सम्बन्ध छोड़ी जीव आप चरणा जोड़ी ।
वारे अविनाशो आवो आवो रे ॥१॥ दया०
आंखों विन सङ्कट आवै खाड़ों में गोता खावै ।
हूं दो वन बैठो बाओ बावरे ॥दयालु ॥२॥

शब्द

अय मातृ भूमी तेरे चरणों में शीश नवाऊं ।
मैं भक्ति भेट अपनी तेरी शरण में लाऊं ॥
माथे पै तुम हो चन्दन छाती पै तुम हो माला ।
जीह्वा पर गीत तुम हो मैं तेरा नाम गाऊं ॥
जिस से हुये सपूत श्री राम कृष्ण जैसे ।
उस तेरी धूली को मैं निज शरीर पर चढ़ाऊं ॥

मानी समुद्र जिस को धूली का पान करते ।
करता है मान तेरा उस पीर को मनाऊं ॥
विदेश मान बारे चढ कर उतर गये सब ।
गोरे रहे न काले तुझ को ही एक पाऊं ॥
सेवा में तेरे सारे भेदों को भूल जाऊं ।
वह पूरा नाम तेरा प्रति दिन सुनू सुनाऊं ॥
तेरे ही काम आऊं तेरा ही मन्त्र गाऊं ।
मन और देह तुझ पर बली दान मैं चढ़ाऊं ॥

शब्द

तैंने नाहक में हीरा सा जन्म गंवाया प्रभु जी की भक्ति बिना ॥
दिन धन्धे में रैन नींद में न कभी हरि गुण गाया खो दिये बृथा दिना ॥१॥
होय निराशो भज अविनासी छोड़ कपट छल माया मेरे मस्ताने मना ॥२॥
धन माया परिवार प्रभु को क्यों इन में रे भरमाया प्राणि फिरे करता गुना ॥३॥
पूर्ण ब्रह्म अजर अविनाशी पावन पवित्र ऐजी प्रभु सब से भिना ॥

शब्द

ऊधो मेरे वह छाब होये में रही ॥टेक॥
पंच वदन द्रग आठ लिंग द्वी द्वादश चरण सही ॥१॥
सम्पत अष्ट युगल दोऊ भर्त्ता दोऊ पुरघन एक तरण गही ॥
वेद परस उठ चले सांवरे नयनन सैन दई ॥३॥
सूर श्याम रवि अंश गये घट पय तज पीवत मही ॥४॥

शब्द

अब तो आंखे खोलो प्यारे अब तो आंखें खो लो रे ॥टेक॥
पूर्व दिशा अब अरुण हैं भई है प्रकृति देवी पट बदल रही है ॥
यम ने तम की बांह गही है, छुप कर भाजे तारे ॥१॥
प्रमुदित नलीनी विहंस खिली है, प्रिय समीर से सुरभी मिली है
अति शोभा मय बन स्थली है अली गण हैं गुँजारे ॥२॥
नव जीवन संचार हुवा है, ऐक्य भाव विस्तार हुवा है ।
सुख मय सब संसार हुवा है, जागे साथी सारे ॥३॥
ऊषा देवी के दर्शन पा कर हुए प्रफुल्लित सभी चराचर ।
तुम क्यों सोये शीश झुका कर, सुध बुध सभी विसारे ॥४॥

शब्द

जाऊं कहां तजि चरण तिहारे ॥टेक॥
काको नाम पतित पावन जग केहि अति दीन पियारे ॥१॥
कौन देव बरि आई विरद हित हरि हरि अधम उधारे ॥२॥
खग मृग व्योधा पाषाण विटप जड़ जब न कवन सुर तारे ॥३
देव दनुज मुनि नाग मनुज सब माया विवश विचारे ॥४॥
तिन के हाथ दास तुलसी प्रभु कहा अपन को हारे ॥५॥

शब्द

खबर ना या जग में पल की, राम सुमर ले सुकृत करले को जाने कल की ॥टेक॥
तारा मण्डल रवि चन्द्रमा जोत झला झल वी।
दिना चार की चटक चांदनी ज्यों बिजली चमकी ॥१॥
ये संसार सुपने को माया ओस बूंद जल की ।
ढलक जाय कछु बार ना लागे ये माया छल की ॥ २॥
ये हंसा देही के भीतर करें खुश्याला दिल की।
जब ये हंसा निकल जायगा माटी जंगल की ॥३॥
काम क्रोध मद लोभ निवारो आस तजे फल की ।
शील संतोश दया उर राखो कहै कबीर दिल की ॥४॥

शब्द

आया हूं शरण में नारायण मुझे मुक्ति का द्वार दिखवो प्रभो
तुही तात मात परिवार तुही धन दौलत घर बार तुही।
नहीं और कोई है सगा मेरा नइया को पार लंबावो प्रभो॥
कभी कर से न पूजा करी तेरी कानों से कथा न सुनी तेरी।
नहीं तर्थी में जाय करी फेरी जन जान के हाथ बढ़ वो प्रभो॥
भव सगर की कछु थाह नहीं कोई आता नजर मल्लाह नहीं।
बिठा कर चरणों की जिहाज में भव पार मुझे पंहुचावो प्रभो।
कर जोर राम की है बिनती मेरे पाप तें नाथ हैं अन गिनती
है नाम तिहारो पतित पावन निज नाम की लाज रखावो प्रभो॥

शब्द

जागिये रघुनाथ कुँवर पंछी बन बोले॥
चंद-किरण शीतल भई, चकई पिय मिलन गई।
त्रिविध मंद चलत पवन पल्लवद्रुम डोले।
प्रात भानु प्रगट भयो, रजनि का तिमिर गयो।
भृंग करत गुंज गान, कमलन दल खोले॥
ब्रह्मादिक धरत ध्यान, सुरनर मुनि करत गान।
जागन की बेर भई नयनपलक खोले॥

तुलसीदास अति आनन्द निरखि के मुखारविंद ।
दीनन को देत दान भूषण बहुमोले ॥

शब्द

अंखियां रहि दर्शन की प्यासी ।
देखो चाहत कमल नैन का निशि दिन रहत उदासी ॥
आये ऊधो फिर आंगन डारि गये गर फांसी ॥
केसर तिलक मोतिन की माला वृन्दावन के बासी ॥
काहू के मन की को जानत लोगन के मन हांसी ॥
सूरदास तुमरे दरस बिन, लेहौं करवत कासी ॥

शब्द

सांवरिया गिरधारी मयिको चाकर राखो जी ॥टेक ॥
नौकर रहसां चाकर रहसां नित उठ दर्शन पांवां ।
वृन्दावन की कुंजगली में गोविन्द लीला गावां ॥ १ ॥
नौकरी में दरशन पांवा सुमरन पांवा खरचा ।
भाव भगत जागेरी पांवा तीन बात शमसेरी ॥ २ ॥
ऊंचे महल २ चिनावां बीच रखवां बारी ।
सांवरिया के दरशन पावां लकुट कमरिया कारी ॥ ३ ॥

जोग करन को जोगी आये तप करने सन्यासी ।
नाम जपन को साधू आये वृन्दावन के वासी ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर ऐसो गहर गंभीर ।
ग्वालिनी को दरशन दीजो तट यमना के तीर ॥ ५ ॥

शब्द

सांची मान सहेली परसों प्रीतम लेवे आवे गो ॥टेक॥
मात पिता भाई सब जाई रे सब सों राखे स्नेह सगाई रे ।
चलति विरियां तेरो दारुण शोक सतावे गो ॥१॥
अब को छेता नाहीं टरे गो रे घर बाहर लो संग रहे गो रे ।
चलति विरियां कोई तोय पकवान पठावे गो ॥२॥
चलने की तय्यारी करले तोषा बान्ध गैलको धरले ।
शंकर आगे २ तेरो डोला भर कर जावे गो ॥३॥

शब्द

दुनियां में बाबा तहीं है गुजारा किसी ढब से ॥टेक॥
घर में रहे तो कैसा योगी, बन में रहे तो कैसा भोगी ।
मांगे भीख बतावें लोभी, त्यागो बना है कब से ॥१॥
बोले तो बाचाल बतावें, अनबोले सरवाय रहा है ।

करे खुशामद हार गया है, दबै हमारे डर से ॥२॥
धरम करे तो द्रव्य लुटावे ,नहीं करे तो सूम बताये।
कहा कहूं कछु कही न जावे, प्रीति करे मतलब से ॥३॥
राम भजन बिन पशु बतावें, भजें तो विघनी विघन मचावें।
राम प्रताप हरि गुण गावे, डरिये कुफर ग़जब से ॥४॥

शब्द

घूंघट का पट खोल रे, तोहे राम मिलेंगे ॥
घट घट रमता राम रमैया, कटुक बचन मत बोलरे ॥तोहे०
रंग महल में दीप बरत है, आसन से मत डोल रे ॥ तोहे०
कहत कबीर सुनो भई साधो अनहद बाजत ढोल रे ॥ तोहे०

शब्द

चला रे मन नाम राम की चाकी ॥टेक॥
इस काया का गरंड बनालो, हथली बना सुरतां की ॥१॥
मनका कीला तन करमानी, पटड़ी धर ममता की ॥२॥
ओंसोहं दो पोसन बैठे, दाना रहा नहीं बाकी ॥३॥
जो कोई पीसे कूड़ा फटक से, उस से ना पिसाना की ॥४॥
मीरां के प्रभू गिरधर नागर, गुरु चरनन में राखी ॥५॥

शब्द

जी अब हरि भूले नाहिं बनै ॥टेक॥
बिपत बिडारन तुम हो गिरधर सुख में मिल घने ॥१॥
मैं आधीन हूं कछु नहीं लायक तुम बिन कौन गिने ॥२॥
सूर स्याम प्रभु बिपत बिडारन बृज निधि शरण तुम्हें ॥३॥

शब्द

कब हू मिलोगे दीना नाथ हमारे ॥टेक॥
जैसे मिले तुम प्रहलाद भक्त को खम्भ फोड़ हिरनाकुश मारे ॥
जैसे मिले तुम द्रोपद सुता को खैंचत चीर दुशाशन हारे ॥
जैसे मिले तुम मीरां बाई को जहर का प्याला अमृत कर डारे ॥
जैसे मिले तुम नरसी भक्त को भात भरन को आप पधारे ॥
सूरदास को कबहू मिलोगे टपटप टपकत नयन हमारे॥

शब्द

शंकर तेरो जटा में चल धार गंग है।
उठते हैं बार बार वारि के तरंग हैं ॥टेक॥
गले मुण्ड माल है कानों में है कुण्डल,

खाने को कन्द मूल फल पीने को भंग है ॥१॥
मृग छाल कमर में कसी वृष राज पै चढे ।
मस्तक में चन्द्र की कला बिभूति अंग है ॥२॥
डमरू त्रिशूल हाथ में गिरजा है अंक में ।
त्रिनेत्र भूजा चार कण्ठ नील रंग है ॥३॥
कैलास में निवास है गण साथ में रहें ।
ब्रह्मानन्द अपने दास के सदा ही संग है

शब्द

देखन को लाला बारो री यशोदा मय्या ॥टेक॥
मथुरा में हरि जन्म लियो है,
भार व्रज को तारो री यशोदा मय्या ॥१॥
केशी मार्यो कंस पछाड़्यो,
जीत्यो है मल्ल अखारो री यशोदा मय्या ॥२॥
कालिदह मे कूद पड्यो हैं,
नाग नाथ लियो कारो री यशोदा मय्या ॥३॥
औरन पै है लाल चुनरिया,
इन पर कम्बल कारो री यशोदा मय्या ॥ ४ ॥
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छबि,
ऐसो है नन्द दुलारो री यशोदा मय्या ॥ ५ ॥

शब्द

गुरु साहिब मेरा बांदी मैं नौकर थारी रहियां हो
आप ही रखोला जिन में रिहियां ॥टेक॥
एक समय में प्रभु आप पधारे जी ।
पल पल दर्शन हम को दीजे ॥१॥
भव तो सागर में प्रभु डूबन लागी जी ।
डूबत पकरी मोरी बंय्या ॥२॥
अधर तखत पे प्रभु आप पधारे जी ।
नित उठ दर्शन हमको दीजे ॥३॥
टीकम सन्त प्रभु खेमजीरे चरना जी ।
गुरु के चरन में लिपटा रहियां ॥४॥

शब्द

ले गयो चीर मुरारी जी मैं कैसे करूं ॥टेक॥
लेकर चीर कदम्ब पर बैठयो हम जल मांहि उघारी जी ॥१॥
तुमरो चीर अभी हम देंगे जल से होजावो न्यारी जी ॥२॥
जो हम जल से न्यारी होवें जायगो लाज तिहारी जी ॥३॥
चन्द्र सखी भज बाल कृष्ण छबि तुम जीते हम हारी जी ॥४॥

शब्द

भज हंसा हरि नाम जगत में जीवन थोड़ा जी।
काया आई पाहुनी हंस आया महमान। पानी का सा बुल बुला थोड़ा सा उन्मान। बना कागज़ का घोड़ा जी ॥१॥
मात पिता सुत बन्धुवा और दुलहनी नार। यहीं मिलै यहीं बीछड़े यह शोभा दिन चार, बना दो दिन का जोड़ा जी ॥२॥
सोऊं २ क्या करे सोवत आवे नींद। यम सिरहा ने यूंखड़े ज्यूं तोरण पै बींद। खिंचा जैसे ताजी घोड़ा जी ॥३॥
राम भजन को हांसी करते मन में राखे पाप। पेट पलनियां वह चलेंगे जूं जंगल के साप, नेह जाने हरि से तोड़ा जी ॥४॥
हाड जले ज्यू लाकड़ो केस जलैं ज्यूं घास। जलती चिता कूं देख के भये कबीर उदास, नेह जाने हरि से जोड़ा जी ॥५

शब्द

आऊंगा न जाऊंगा मरूंगा न जीऊंगा
गुरु के शब्द में अमी रसपीऊंगा ॥ टेक ॥
कोई फेरे माला कोई फेरे तसबी,
देखोरे लोगो दोनों हैं कसबी ॥ १ ॥
कोई जावे मक्के कोई जावे काशी,

दोनों के गल बिच पड़ गई फांसी ॥२॥
कोई पूजे मढिया कोई पूजे गौरां
दोऊ की मतिया हर लई चोरां ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो नर लोई
हम ना किसी के हमारा न कोई ॥ ॥ ४॥

शब्द

तड़फे बिन बालम मेरा जिया ॥टे॥
दिन नहीं चैन रैन नहीं निद्रा तडफ तडफ के भोर किया ॥१॥
तन मन मोर रहट अस डोले सूनी सेज पर जल छिया ॥२॥
नयन थकित भये पंथ न सूझे सांई बेदर दी सुध न लिया ॥३
कहत कबीर सुनो भाई साधो हरा पीर दु:ख जोर किया ॥४

शब्द

दशीन देना कृष्ण मुरारी मथुरा के जाने वाले ॥ टेक ॥
गोवां तड़फ रहीं हैं हाय इनको चारा नहीं सुहाय।
दे दशीन का पानी पिलाय तुम हो प्यास बुझाने वाले ॥ १ ॥
गोपी बन में रूदन मंचावें नैनों से नीर बहावें ।
क्षण क्षण में ध्यान लगावें तुम हो पार लंघाने वाले ॥२॥

जैसे जल बिन तड़फत मीन चकवी निश को है अति दीन ॥
तुमरी बाजे मधूरी बीन तोड़ दो सब माया के ताले ॥२॥
छम छम आई है सावन बाहर बूंद रिम झिम परत फूवार।
सखियां दर्शन बिन बेजार इन को छाती से लिपटाने वाले ॥४
तुम हो पूर्ण परमानन्द यदु कुल भूषण ब्रज के चन्द।
दर्शन देना आनन्द कन्द कान्हा कारी कम्बली वाले ॥५॥

शब्द

अवधू काया मध्य सार है देखनायक देही में दीदार है ।टेक॥
बोलते का खोज करना सहज सुरत आकाश धरना।
काहे को यम दण्ड भरना जीवते नर उलट मरना ॥ १॥
शिखर अंतर नादबाजे जन्म मरण उपाधि भागे;
शब्द सुनर डोर लागी आत्मा दिनरैन जागी॥
सत्य शब्द भजन कार ॥ २ ॥
महल की जब खबर पाई चीन्ह लीन प्राण भाई।
दिव्य दृष्टि नजर आई सहस्र सूरत दे दिखाई।
उतर परले पार ॥ ३ ॥
ज्ञान जोगी उदास बासा अगम घर अवधूत बांका।
खोल कुलफ मिटायसांसा कहे मछन्दर ना फिर उदास।
चेतना निरंकार ॥ ४ ॥

शब्द

यह तन बालू का सा डेरा ॥ टेक ॥
जैसे दामिन दमक चमक का क्षण नहीं रहत उजेरा।
मेढो मण्डप माल खजाना और परिवार घनेरा ॥ १ ॥
सो सब कौतुक सो दीखत है राम संभाल समेरा।
गज घोड़ा और चाकर चेरा आखर कोउ न तेरा ॥ २ ॥
जिन के कारण डोलत भरमत करता मेरा मेरा।
थोड़ेसे जीवन के करण बहोतक करै बखेड़ा ॥ ३ ॥
काल बलि की खबर नहीं है करत अचानक फेरा।
कहै सुखदेव समझ नर भोंदू छोड़ विषय उरझेरा।
चरण दास हरि भजो नित जिस से होय निबेड़ा ॥ ४ ॥

शब्द

लैलोरी लोचन भग्ला हूं ॥ टेक ॥
लोचन लाभ लूट लो सजनी फिर न रहै अन्तर उर दाहु ॥ १
सखीसयानीं एक मिथिला पुर की घर२ देत सीख सबकाहु।
कब २ राम अवध पुरऐ हैं कब तुम नारे अजुध्या जाहु ॥ ३॥
कहै रघु राज युगलछनि निरखत होत सिया रघुबीर विवाहु ॥४

शब्द

कोई है सतगुरु का लाल नाम रंग रांचा हो ॥टेक॥
आदि अहिंसा धर्म पहचाने सत्य रूप दान हृदय मैं आने ।
तन मन चोरी प्रकट बखाने आप समान सर्व हित माने ।
अचल नेम दृढ़ सांच कांच का सांचा हो ॥१॥
त्यागो काम अष्ट प्रकारा मार क्रोध मद करदो छारा ।
बहे न लोभ मोह की धारा चित समान रहे दातारा ॥
निर्मुख द्वैत न जान आन जिन जांचा हो ॥२॥
स्वाद गंध रस रूप रंग के पांचों बैरी मार संग के ।
जप तप जोधा जोड़ संग के डाटो डाट सकलजगं के ।
क्या मूर्ख गे क्रूर करनी का कांचा हो ॥३॥
सुन दुर्वचन दुःखो नहीं होवै कौन जानै जागै के सोवै ।
विरत दाग धीरज से धोवे कर्म काष्ठ काहु नहीं रोवे ।
अपना लिखा ललाट आप हंस बांचा हो ॥४॥
स्वर्ग नरक इच्छा दोऊ त्यागो निर्भय रंग रंगावे रागी ।
शिम्भूदास शब्द ली लागो अशा तृष्णा त्याग घर भागो ।
म्हारे गुरू ने मारा तान ज्ञान तमाचा हो ॥ ५ ॥

शब्द

कूंजी ला देखो भाई थारी काया नगर गुल जार ॥ टेक ॥
शिव की पुरीब्रह्म का बासा बिष्णु बैकुण्ठ रचाई ।
मका मदीना पुरी द्वारका अजुध्या यहां ही ॥ १ ॥
नौसे नदी नवासी झरने सात समुद्र माहीं ॥ १ ॥
गंगा जमना है सरस्वती त्रिबेणी यहां ही ॥ २ ॥
नौ नाड़ीऔर बहत्तर कोठे इसी महल के माहीं ॥
नौ दरवाजे प्रकट दीखें दसवां गुप्त बनाई ॥ ३ ॥
जैसे तार को पैरोवे मकरिया उसी तार चढ जाई ।
सुरत निरत कर ऐसे लागो तब दर वाज़ा पाई ॥ ४ ॥
गुरू अपने से लेकर ताली झट परै खोल बगाई ।
खोली किवड़िया चढा गगन में अनुभव नगरी पाई ॥ ५ ॥
ब्रह्म दत्त ऊपर किरपा होगई गुरू मिले नाथ हंसाई ।
एक महल ऐसा दरशाया छिन में मुक्ति पाई ॥६ ॥

शब्द

दीनन दुख हरण देव सन्तन हित कारी ॥
अजा मील गीध व्याध इन में कहो कौन साध पंछी मुँह पद ॥
पढात गनका सीता री ॥ १ ॥

ध्रुव के सिर छत्तर देख प्रह्लाद को उभार देत।
भगत हेत बान्ध्यो सेत लंक पुरी जारी ॥ २ ॥
तण्डुल देत रीझ जात साग पात सों अगड़ात घ्रिणत नहीं
झूटे फल खाये मीठे खारो ॥ ३ ॥
गज को जब ग्राह ग्रसो दुःशाशन चीर खसो।
सभा बीच कृष्ण २ द्रोपदी पुकारी ॥ ४ ॥
इतने हरि आयगये बचनां आरूढ भये सूरदास द्वार ठाडो
आन्ध्र री भिखा री ॥ ५ ॥

शब्द

चरखा चलन लाग्यो है निकसैं बागड़ सूत हजारी ॥ टेक ॥
पांच तत्व का बन्या चरखला बिच मुड़ियन की बाड़ी।
सभी पखुरिया फिरने लागीं अपनी २ बारी ॥ १ ॥
राम नाम को खूंटा रोप्यो सुरता माल पसारी।
जोबन बान्ध सुरत से कातो परमेश्वर की प्यारी ॥ २ ॥
निकसें तार पवन से पतला धूंवें से अधि कारी।
जिन की सुरत गगन में पहुंची सो हंसा भव पारी ॥ ३ ॥
एक तार दोतार मिला के बुन के बना लई सारी।
भानीनाथ शरण सत्गुर की गरुड़ चढे गिरधारी ॥ ४ ॥

शब्द

छांडि मन हरि विमुखन को संग ॥ टेक ॥
कहा भयो पय पानकराये विष नहीं तजै भुजंग ॥ १ ॥
जा के संग कुबुद्धि उपजे परत भजन में भंग ॥ २ ॥
काम कोध मद लोभ मोह में निश दिन रहत उमंग ॥ ३ ॥
काग ही कहा कपूर खवाये श्वान न्हवाये गंग ॥ ४ ॥
खर को कहा अरगजा लेपन मरकट भूषण अंग ॥ ५ ॥
पाहन पतित बाण नहीं भेदत रीतो करत निशंग ॥ ६ ॥
सुरदास खल कारी कामर चढत न दूजो रंग ॥ ७ ॥

शब्द

हूं वारी मुख फेर पियारे करवट दे मोय काहे को मारे ॥टेक॥
करवत भला न करवट तोरी लाग लगे सुन बिनती मोरी
तन चीरो तो मुखना मोड़ूं लगी प्रीति अब कैसे तोड़ूं ।
हम तुम बीच हुआ नहीं कोई तुम हो पुरुषनार हम होई ।
कहत कबीर सुनो नर लोई हम न किसी के हमारा न कोई ॥

श्री भगवद्भक्ति आश्रम से प्रकाशित पुस्तकें।

१ भाषा फक्किका प्रकाश प्रथम खण्ड।

इस पुस्तक में सिद्धान्त कौमुदी की फक्किकाओं को विस्तार पूर्वक सरल रीति से समझाया गया है। १५० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य ॥)

२ ज्ञान धर्मोपदेश।

इस में सब वेदों तथा वेदान्त का सार संग्रहित है अन्त में उत्तम कवितायें हैं। मूल्य -)॥।

शब्द सदाचार संग्रह।

इस पुस्तक में अच्छे २ महात्माओं के उत्तम शब्दों का संग्रह है। मूल्य -)।

४. वेदोपनिषद्।

इस पुस्तक में पांच उपनिषद् तथा चारों वेदों से उत्तम २ मन्त्रों का संग्रह अर्थ सहित है। मूल्य ।-)

५. अष्टोत्तरशत मन्त्र माला॥

इस पुस्तक में उपनिषदों तथा गीता से अहंग्रह उपासना के उत्तम श्लोकों का संग्रह अर्थ सहित है। मूल्य -)

सत्य शब्द संग्रह मूल्य ।≠) तथा गीता का सरल संस्कृत में अन्वय शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले हैं॥

मैनेजर

"भक्ति प्रेस" भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा (रेवाड़ी)

दोहे।

सहजो गुरु प्रसन्न हों मूंद लिये दोउ नैन।
फिर मोसू ऐसे कह्यो समझ लेउ यहसैन ॥ १ ॥
चींटी जहां न चढ सके, सरसों ना ठहराय।
सहजो को वा देश में, सत्गुरु दई बसाय ॥ २ ॥
प्रेम बिना धीरज नहीं विरह बिना वैराग।
सत्गुरु बिना मिटे नहीं, मन मनसा का दाग ॥ ३ ॥
नैनो की कर कोटरी पुतली पलंग बिछाय ॥
पलकों की चिक डाल करक, पिया को लिया रिझाय ॥४
केथनो के सूरे घने थाते बान्धे तीर।
प्रेम चोट जिन के लगे ताके बिकल शरीर ॥ ५ ॥
प्रीति बहुत संसार में नाना विधि की सोय।
उत्तम प्रीत सो जानिये जो सत्गुरु से होय ॥ ६ ॥
सुरता मांहीं जप करे, तन सू न्यारो जौन।
मिले सच्चिदाननन्द में गहे रहे जो मौन ॥ ७ ॥
हम तुमरो सुमरन करें, तुम चितवत मोहि नाहीं।
सुमरता मन की प्रीति है, सोमन तुमहीं माहीं ॥ ८ ॥
दया नम्रता दीनता, क्षमा शील सन्तोष।
इनको ले सुमरन कर, निश्चय पावे मोक्ष ॥ ९ ॥

दादू नीका नाम है, आप कहै समझाय ।
और आरम्भ सो छोड़ कर हरि जी से चित लाय ॥ १० ॥
आयो प्रभु शरणागति कृपासिन्धु दयाल ।
एक अक्षर हर मन बसे नानक हात निहाल ॥ ११ ॥
तुलसी बिलम्ब न कीजिये भजिये राम सुजान ।
जगत मजूरी देत है क्यो राखे भगवान ॥ १२ ॥
बेर २ नहीं पाइये सुन्दर मानुष देह ।
राम भजन सेवा सुकृत ये सौदा कर लेय ॥ १३ ॥
कबीर सोई मुख धन्य है जिहि मुख निकसे राम ।
देही किस की बापुरी हो पवित्र है ग्राम ॥ १४ ॥
अलियुग सम युग आन नहीं जो नर करहिं विश्वास ।
गाई राम गुण गण विमल भव तर विना प्रयास ॥ १५ ॥
विन विश्वास भक्ति नहीं तेहि विन द्रवहिं न राम ।
राम कृपा विन स्वप्नहुं मन न लहै विश्राम ॥ १६ ॥
जासु नाम भव भेषज हरण ताप त्रय शूल ।
सो कृपाल मोहिं ताहि पर सदा रहहिं अनुकुल ॥ १७ ॥
सहजो भज हरि नामको तजो जगत सू नेह ।
अपना कोई है नहीं अपनी सगी न देह ॥ १८ ॥
जामें जाकी प्रीति हो रटिये वारम्बार ।
सब देवन का नाम बल धरे शेष भू भार ॥ १९ ॥
अजामेल धाखे लियो जाने सब संसार ।

वालमीक भये ब्रह्म सम उलटो नाम विचार ॥ २० ॥
परमानन्द स्वरूप तू नहीं तो में दुःख लेश ।
अज अविनाशी ब्रह्म चित क्यों मानों हिय क्लेश ॥ २१ ॥
आप भुलानो आप में बनयो आप ही आप ।
जाको तू ढूंढत फिरे सो तू आप ही आद ॥ २२ ॥
राग द्वेष मन के धरम तू तो मन नहीं होय ।
निर्विकल्प व्यापक अमल सुख स्वरूप तू सोय ॥ २३ ॥
जैसे सांचे में परयो होत कनक बहु अंग ।
नानावत् यों ब्रह्म में लय उपाधि को संग ॥२४॥
ज्यों तिल मांही तेल है ज्यों चकमक में आग ।
तेरा प्रीतम तुझ में जाग सके तो जाग ॥२५॥
भेद ज्ञान तौलो भलो जौलों मुक्ति न होय ।
परम जात पर घर भई तब विकल्प नहीं होय ॥२६॥
तू है सो परमात्मा मैं हूं ब्रह्म स्वरूप ।
यही आत्मा ब्रह्म है जीव है ब्रह्म स्वरूप॥२७॥
पिञ्जर प्रेम प्रकाशिया जागी ज्योति अनन्त
संशय छूटा भय मिटा मिला पियाराकन्त ॥२८॥
सत् चित् आनन्द एकतू ब्रह्म अजन्य असङ्ग ।
विभु चेतन माया करै जग को उत्पत्ति भंग ॥ २९ ॥
सब ही के भीतर बसै सब का जानन हार ।
वाही ते प्रगट भई नाना बस्तु अपार ॥ ३० ॥

देह मरे तू है अमर पारब्रह्म है सोय ।
अज्ञानी भटकत फिरे लखे सो ज्ञानी होय ॥ ३१ ॥
देह नहीं तू ब्रह्म है अविनाशी निर्वान
नित न्यारो तू देह से देह कर्म सब जान ॥३२॥
डोलन बोलन सो बनो भक्षण करन अहार ।
दुःख सुख मैथुन रोग सब गर्मी शीत निहार ॥३३॥
जाति वर्ण कुल देहकी सूरति मूरति नाम ।
उपजै विनशै देह सो पांच तत्व को ग्राम ॥३४
पावक पानी वायु हैं धरति अरु अकाश ।
पांच तत्वके कोटमें आय कियो तैं वास ॥३५॥
निराकार निर्लिप्त तू देह ज्ञान अकार ।
आपन देही मान मत यही ज्ञान तत सार ॥३६॥
गले कटै काया यही बिनै मिटै फिर होय ।
जीव अविनाशी नित्य है जाने विरला कोय ॥३७॥
चेतन ज्यों की त्यों सदा अकर्ता जोय ।
सब कर्मन सै रहित है आतम ऐसो होय॥ ३८॥
काहु ते उपजो नहीं वाते भयो न कोय ।
वह न मरै मारै नहीं राम कहाव सोय ॥३९
सत् चेतन आनन्द है आदि अन्त मध्य हीन ।
आदि अन्त अकार को सो तू झुठी चीन ॥४०॥
इन्द्रिय जान सकै नहीं मन बुद्धि लहे न ताय।

ज्ञान दृष्टि पहिचानिये वासों वाको पाय ॥४१॥
सब में देखे आप कू सब कूं अपने मांही।
पावे जीवन मुक्त को या में संशय नांहि ॥४२॥
जल थल पावक राम है राम रमो सब मांहीं।
हरि सबमें सब राममें और दूसरो नांहि ॥४३॥
ऊंच नीच निर्गुण गुणी रंक नाथ अरु भूप।
हूं घट वढ़ कासों कहूं सब आनन्द स्वरूप ॥४४॥
शस्त्र छेद सके नहीं पावक सके न जारी।
मरै मिटे सो तू नहीं गुरु गम भेद निहारि ॥४५॥
नहीं कारण कार्य कछु नहीं काल नहीं देश।
शिव सवरूप पूरण अचल सजाति विजाति न लेश॥
तज्ञ नहीं शुभाशुभ नहीं ईश्वर नहीं जीव।
सत्य झूठ मो में नहीं अमल समल त्रिय पीव ॥४७॥
जैसे दिनकर के उदय दीपक द्युति दुरि जात।
तैसे ब्रह्मानन्द में आनन्द सबै विलास ॥४८॥
क्षुधा पिपासा हर्ष पुनि शोक जन्म अरु अनन्त।
ये षट उरमी धरम धन आतम रहित अनन्त ॥४९॥
आपस में फूतरी सवै करत परस्पर रार ॥५०॥
ज्ञानी करे अनेक कर्म विधिवत जग व्यवहार।
लिये न धूम आकाश ज्यों ज्ञान्यो जगत असार ॥५१॥
जाग्रत स्वप्न जहां नहीं जहां सुषुप्ति मन लिन।

मैं तू तहां न सम्भवे आतम निश्चय कीन ॥५२॥
जाग्रत मांहिं सुषुप्ति मतवारे की केल।
करे चेष्टा बाल ज्यों आतम सुख रहो झेल ॥५३॥
जैसे भूजे अन्त में उदूवता भई छीन।
तैसे आतमवत्त की भई जगत मति लीन ॥५४॥
जो ताकी पूजा करत संञ्चित सुकृत सुलेत।
दोष दृष्टि तिहीं जो लखे ताही पाप फल देत ॥५५॥
हेतु मोक्ष को ज्ञान इक नहीं कर्म नहीं ध्यान।
रज्जू सर्प तब हीं नसे होय रज्जू को ज्ञान ॥५६॥
जगत खेदि में परो जिन केवल दुख ता माहीं।
सत्य सत्य पुनि सत्य कहूं सुख स्वप्नेहू नाहीं ॥५७॥
सहजों भज हरि नाम को तजा जगतसूं नेह।
अपना कोई हैं नहीं अपनी सगी न देह ॥५८॥
यही कहैं गुरु देव जी यही पुकारें सन्त।
सहजो तज या जगत को तोही तजैंगे अन्त ॥५९॥
जब लग चावल धान में तब लग उपजे आय।
जग छिलके को तज निकस मुक्त रूप होजाय ॥६०॥
कुटुम्ब संघाती बीच में आदि अन्त नहीं होय।
बीच मिले बीच ही गये सहजो संग न को ॥६१॥
सहजो स्वारथ सब लगे दारा सुत और बीर।
जीवन जोतैं बैल ज्यों मुये बटवें सीर ॥६२॥

सहजो जीवत सब सगे मुये निकट नहीं जांय।
रोवें स्वारथ आपने स्वपने देख डरायं ॥६३॥
स्वांस ख़जानो जात है ताकी सुधि नाहीं।
सहजो ख़रचो कहा रहे कर हिसाब घर माहीं ॥६४॥
झुर झुर के पिंजरा भये रोय गमाये नैन।
मर गये सो नाहीं मिले सहजो सुने न बैन ॥६५॥
जो रोवे सो बाहुरे तो रोवे दिन रात ।
तन छीजे वह ना मिले सहजो कूड़ी बात ॥६६॥

चौपाई।

अगुण अखंड अनंत अनादी। जेहि चिंतहिं परमारथवादी
नेति नेति जेहि वेद निरूपा। चिदानंद निरुपाधि अनूपा॥
शंभु विरंचि विष्णु भगवाना। उपजहिं जासु अंशते नाना॥
ऐसे प्रभु सेवकबस अहहीं। भक्तहेतु लीलातनु गहहीं॥
जो यह बचन सत्य श्रुति भाषा तौ हमार पूरहिं अभिलाषा॥
भक्तवछल प्रभु कृपानिधाना। विश्ववास प्रकटे भगवाना॥
दोहा-नीलसरोरुह नीलमणि, नीलनीरधरश्याम॥
लाजहि तनुशोभा निरखि, कोटिकोटिशतकाम॥

चौपाई ।

शरदमयंकवदन छबि सीवा । चारु कपोल चिबुक दरग्रीवा ॥
अधरअरुण रद सुँदर नासा । विधुकरनिकर विनिंदक हासा ॥
नव अंबुजअंबकछबि नीकी । चितवनि ललित भावतीजीकी ॥
भृकुटि मनोजचापछबिहारी । तिलक ललाटपटलदुतिकारी ॥
कुंडल मकर मुकुट शिर भ्राजा । कुटिल केश जनु मधुप समाजा ॥
उर श्रीवत्स रुचिर बन माला । पदिकहार भूषण मणि जाला ॥
केहरिकंधरचारु जनेऊ । बाहुविभूषण सुंदरतेऊ ॥
करिकरसरिस सुभग भुजदंडा । कटि निषंग कर शरकोदंडा ॥

दोहा–तडितविनिंदक पीत पट, उदररेखवरतीनी ॥
नाभि मनोहर लेति जनु, यमुनभंवरछगि छीनी ॥

चौपाई ।

पदराजीव बरणि नहिं जाहीं । मुनिमनमधुप बसहिँ जेहिमाहीं ॥
बामभाग शोभति अनुकूला । आदिशक्ति छबिनिधि जगमूला ॥
जासु अंश उपजहिं गुणखानी । अगनित रमा उमा ब्रह्मानी ॥
भृकुटिबिलास जासु जग होई । राम बामदिशि सीता सोई ॥
छबिसमुद्र हरिरूप बिलोकी । एकटक रहे नयनपट रोकी ॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा । तृप्ति न मानहिं मनु शतरूपा ॥
हर्ष बिवश तनुदशा भुलानी । परेदंडइव गहि पद पानी ॥

एकबार जानकी समेता। बैठे प्रभु निज रुचिर निकेता॥
भुज प्रलंब उर नयन विशाला। पीतवसन तनु श्यामतमाला॥
सिर परसे प्रभू निज करकंजा। तुरत उठाए करुणापुँजा॥
दोहा–बोले कृपानिधान पुनि, अति प्रसन्न मोहि जानि॥
मांगहु वर जोइ भाव मन, महादानि अनुमानि॥

चौपाई।

कोटिमनोज देखि छबि मोहा। सीताकर चामर वर सोहा॥
तेहि अवसर मुनि नारद आए। सुरहित लागि विरंचि पठाय॥
तेजपुंजतनु करतलबीना। हरिगुण गणगावत लयलीना॥
देखि राम सहसा उठि धाए। करत दंडवत मुनि उर लाए॥
सादर निज आसन बैठारे। जनक सुता तव चरणपखारे॥
तेहि चरणोदक भवन सिंचावा। अघपावन हरि शीश चढ़ावा॥
सुन मुनि विषयनिरत जे प्रानी। हम सरीखे देहअभिमानी॥
तिन्हकहं सतसंगति तब होई। करै कृपा जाकहं प्रभु सोई॥
ताकहं मुनि नाहिंन भव आगे। जेहि बिनु हेतुसंतप्रिय लागे॥
तातें नारद मैं बड़भागी। यद्यपि गृहकुटुम्बअनुरागी॥
दो०–सुनि हरिबचन मधुर प्रिय, करि बिचार मुनि धीर॥
परम कृपालुक लोकहित, लागि कहत रघुवीर॥

चौपाई।

शोक कलकलोचन मति क्षोनी। हरी विमल गुणगण जगयोनी॥

भरत विवेक बराह विशाला । अनायास उधरे तिहि काला ॥

चौपाई ।

नूतन किसलय मनहु कृशानू । काल निशासम निशि शशि भानू
कुवलयविपिन कुंतवनसरिसा । वारिद तप्ततेल जनु बरिसा ॥
जेहि तरु रहौं करत सोई पीरा । उरगश्वाससम त्रिविध समीरा
कहहूंते कछु दुख घटि होई । काहि कहौं यह जान न कोई ।
तत्त्व प्रेम करमम अरु तोरा । जानत प्रिया एक मन मोरा ॥
सो मन सदा रहत तोहिं पाहिं । जानु प्रीतिरस इतनेहि माहीं ॥
प्रभुसंदेश सुनत बैदेही । मगन प्रेम तनुसुधि नहिं तेही ॥
कह कपि हृदय धीर धरु माता । सुमिरि राम सेवक सुखदाता ॥
उर आनहु रघुपतिप्रभुताई । सुनि मम बचन तजहु बिकलाई ॥
दोहा–निशिचरनिकर पतंगसम, रघुपतिबाण कृशानु ॥
जननि हृदय निज धीर धरु, जरे निशाचर जानु ॥

चौपाई ।

संतअसंतन की अस करणी । जिमि कुठार चंदन आचरणी ॥
काटे परशु मलय सुनु भाई । निजगुण देइ सुगंध बसाई ॥
दोहा–ताते सुरशीशन चढत,जगवल्लभ श्रीखंड ॥
अनल दाहि पीटत घनहिं परशुवदन यह दंड ॥

चौपाई ।

बिषयअलंपट शीलगुणाकर। परदुख दुख सुख सुख देखे पर ॥
सम अभूत रिपु बिमद बिरागी। लोभामर्ष हर्षभयत्यागी ॥
कोमलचित दीनन पर दाया। मनवचक्रम मम भक्त अमाया ॥
सबहिं मानप्रद आपु अमानी। भरतप्राणसम मम ते प्रानी ॥
बिगतकाम मम नामपरायण। शांत बिरक्त नीतिमुदितायन ॥
शीतलता सु सरलता मैत्री द्विजपदप्रेम धर्मजनयित्री ॥
येह सब लक्षण बसहिं जासु। उर जानेहु तात संत संतत फुर॥
शमदमनियम नीती नहिं डोलहिं। परुष बचन कबहूं नहिं बोलहीं

दोहा-निंदा स्तुति उभय सम, ममता मम पदकंज ॥
ते सज्जन मम प्राणप्रिय, गुणमंदिर सुखपुंज ॥

चौपाई ।

सुनहु असंतनकेर सुभाऊ। भूलेहु संगति करिय न काउ ॥
तिन्हकर संग सदा दुखदाई। जिमि कपिलहिं घालै हरहाई ॥
खलन्हहृदय अतिताप विशेषी। जरहिं सदा परसंपति देषी ॥
जहं कहूं निंदा सुनहिं पराई। हरषहि मनहुं परी निधि पाई ॥
कामक्रोधमदलोभपरायन। निर्दय कपटी कुटिल मलायन ॥
बैर अकारण सबकाहूसों। जो करु हित अनहित ताहूसों ॥
झूठे लेना झूठदेना। झूठे भोजनझूठ चबेना ॥

बोलहिं बचन मधुर जिमि मारा। खाहिं महाअहि हृदय कठोरा
दोहा-परद्रोही परदाररत परधन परअपवाद॥
ते नर पांमर पापमय देह धरे मनुजाद॥

चौपाई।

लोभै ओड़न लोभै डासन। शिश्नोदरपर यमपुरत्रास न॥
काहूकी जो सुनहिं बड़ाई। श्वास लेहिं जनु जूड़ी आई॥
जब काहूके देखहिं विपति। सुखी होहिं मानहुं जगनृपति॥
स्वारथरत परिवार विरोधी। लंपट काम लोभ अति क्रोधी॥
मातु पितागुरु विप्र न मानहिं। आपु गए अरु घालहि आनहिं॥
करहिं मोहबश द्रोह परावा। सत्संगति हरिभक्ति न भावा॥
अवगुणसिंधु मंदमति कामी। वेदविदूषक परधन स्वामी॥
विप्रद्रोह परद्रोह विशेषी। दंभ कपट जिय धरे सुवेषी॥
दोहा-ऐसे अधम मनुज खल, कृतयुग त्रेता नाहिं॥
द्वापर कछुक वृंद बहु, होइहैं कलियुग मांहिं॥

चौपाई।

परहितसरिस धर्म नहिं भाई। परपीड़ासम नहिं अधमाई॥
निर्णय सकल पुराणवेदकर। कहेउं तात जानहिं कोविद नर॥
नरशरीर धरि जे परपीरा। करहिं ते सहहिं महाभवभीरा॥
करहिं मोहबश नर अघ नाना। स्वारथरत परलोक नशाना॥

कालरूप मैं तिन्हकहं ताता । शुभ अरु अशुभकर्मफलदाता ॥
अस बिचारि जो परम सयाने । भजहिं मोहिं संसृतदुख जानै ॥
त्यागहिं कर्म शुभाशुभदायक । भजहिं मोहिं सुरनरमुनिनायक ॥
सँतअसंत गुण ते न भाखै । परहिं भव जिन्ह लखि राखे ॥

दोहा–सुनहु तात मायाकृत, गुण अरु दोष अनेक ॥
गुण इह उभय न देखिअहि, देखिय सो अविवेक ॥

चोपाई ।

एकबार रघुनाथ बुलाए । गुरु द्विज पुरवासी सब आए ॥॥
बैठे गुरु द्विजबर मुनि सज्जन । बोलेबचन भक्तभयभंजन ॥
सुनहु सकल पुरजन मम बानी । कहौं न कछु ममता उर आनी
नहिँ अनिति नहिँ कछुप्रभुताई । सुनहु करहु जो तुमहिं सुहाई
सोइ सेवक प्रियतम मम सोई । मम अनुशासन मानै जोई ॥
जो अनिति कछु भाषौं भाई । तौं मोहिं बरजहु भय बिसराई ॥
बड़े भाग्य मानुषतनु पावा । सुरदुर्लभ सद्ग्रंथन गावा ॥
साधनधाम मोक्षकर द्वारा । पाइ न जेहं परलोक संवारा ॥

दोहा–सो परत्र दुख पावइ, शिर धुनि धुनि पछिताइ ॥
कालहि कर्महि ईश्वरहि, मिथ्या दोष लगाइ ॥

चोपाई ।

एहि तनुकर फल विषय न भाई । स्वर्ग स्वल्प अँतहु दुखदाई ।

नरतनु पाइ विषय मन देहीं। पलटि सुधा ते शठ विष लेहीं॥
ताहि कबहु भउ कहै न कोई। गुंजा गहै परसमणि खोई॥
आकर चारि लाख चौरासी। योनिन भ्रमत सीव अविनासी।
फिरत सदा माया के प्रेरे। काल कर्म सुभाव गुण घेरे॥
कबहुंक करि करुणा नरदेही। देत ईश बिनु हेतु सनेही॥
नरतनु भववारीधिकहं बेरे। संमुखमरुत अनुग्रह मेरे॥
कर्णधार सदुरु दृढ़नावा। दुर्लभसाज सुलभ करि पावा॥

दोहा—जो न तरै भवसागरहि, नर समाज अस पाइ।
सो कृतनिंदक मंदमति आतमहागति जाइ॥

चौपाई।

जो परलोक इहाँ सुख चहहू। सुनि मम वचनहृदय दृढ़ गहहू॥
सुलभ सुखद मारग यह भाई। भक्ति मोरि पुराण श्रुति गाई॥
ज्ञानअगम प्रत्यूह अनेका। साधन कठिन न मनकहं टेका॥
करत कष्टवहु पावइ कोऊ। भक्तिहीन प्रिय मोहिं न सोऊ॥
भक्ति स्वतंत्र सकलसुखखानो। बिन सत्संग न पावहिं प्रानी॥
पुण्य पुंज बिनु मिलहिं न संता। सत्संगति संसृतिकर अंता
पुण्य एक जगमँह नहिं दूजा। मन क्रम वचन विप्रपदपूजा॥
सानुकूल तेहिपर मुनिदेवा। जो तजि कपट करै द्विजसेवा॥

दोहा—औरौ एक गुप्त मत, सबहिँ कहौं कर जोरि॥
शंकर भजन बिना नर, भक्ति न पावै मोरि॥

चौपाई ।

कहहु भक्तिपथ कवन प्रयासा । योउ न मख जप तप उपवासा
सरल सुभाव न मन कुटिलाई । यथालाभ संतोष सदाई ॥
मोर दास कहाइ नर आसा । करै कहहु तो कहँ विश्वासा ॥
बहुत कहौं का कथा बड़ाई । यहिं आचरण बश्य मैं भाई ॥
बैर न विग्रह आश न त्रासा । सुखमय ताहि सदा सब आशा ॥
अनारंभ अनिकेत अमानी । अनघ अरोष दक्ष विज्ञानी ॥
प्रीति सदा सज्जनसंसर्गा । तृणसम विषय स्वर्ग अपवर्गा ॥
भक्तिपक्ष हठ नहिँ शठताई । दुष्टकर्म सब दूरि बिहाई ॥

दोहा–मम गुणग्रामनामरत, गतममता मदमोह ॥
ताकर सुख सोइ जानै, परानंदसंदोह ॥

चौपाई ।

भक्तहीन बिरंच कि न होई । सब जीवनसम प्रिय होहिं सोई ॥
भक्तिवंत अति नीचौ प्राणी । मोहिं प्राणप्रिय सुनु मम बानी ॥
लागे करन ब्रह्म उपदेशा । अज अद्वैत अगुण हृदयेशा ॥
अकल अनीह अनाम अरूपा । अनुभवगम्य अखंड अनूपा ॥
मनगोतीत अमल अविनाशी । निर्विकार निरवधि सुखराशी
सो तैं तोहिं ताहि नहिं भेदा । बारिबीच इव गावहिं वेदा ॥
ज्ञानहिं भक्तिहिं नहिं कछु भेदा । उभय हरहिं भवखेदा ॥

नाथ मुनीश कहहिं कछु अंतर । सावधान होइ सुनु बिहंगवर
ज्ञान बिराग योग विज्ञाना । ए सब पुरुष सुनहु हरियाना ॥
पुरुषप्रताप प्रबल सबभांती । अबला अबल सहज जड़जाती ॥
दो०-पुरुष त्यागि सक नारिकहं, जो बिरक्त मतिधीर ।
नतु कामी जो विषयवश, विमुख जे पद रघुवीरा ॥

॥ इति श्री ॥

यह पुस्तक श्रीमति रानीजी साहिबां निहालकोर
पत्नी श्रीमान् लेफटैनैंट राव बहादुर राव
बलबीरसिंह जी ओ. बी. ई. ने
निज व्यय से छपवाई ।

मुद्रकः- भूमानन्द ब्रह्मचारी भक्ति प्रेस भगवद्भक्ति आश्रम
रामपुरा रेवाड़ी ।